श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

❖ खिलवत ❖

किताब खिलवत गैब की
सूरत अर्ज की जो हकसों करी है

ऐसा खेल देखाइया, जो मांग लिया है हम ।
अब कैसे अर्ज[1] करूं, कहोगे मांग्या तुम ।।१।।
कछु आस न राखी आसरो, ए झूठी जिमी देखाए ।
ऐसी जुदागी कर दई, कछू कह्यो सुन्यो न जाए ।।२।।
बैठी अंग लगाए के, ऐसी करी अन्तराए ।
ना कछू नैनों देखत, ना कछू आप ओलखाए ।।३।।
बैठी अंग लगाए के, ऐसी दई उलटाए ।
न कछू दिल की केहे सकों, न पिया सब्द सुनाए ।।४।।
बैठी आंखें खोल के, अंग सों अंग जोड़ ।
आसा उपजे अर्ज को, सो भी दई मोहे तोड़ ।।५।।
सदा सुख दाता धाम धनी, अंगना तेरी जोड़ ।
जानो सनमंध कबूं ना हुतो, ऐसा किया बिछोड़ ।।६।।
बैठी सदा चरन तले, कबूं न्यारी ना निमख[2] नेस ।
पाइए न नाम ठाम दिस कहूं, ऐसा दिया विदेस ।।७।।

१. प्रार्थना । २. पलभर ।

बैठी तले कदम के, बीच डारे चौदे तबक ।
दूर-दराज[1] ऐसी करी, कहूं नजीक न पाइए हक ।।८।।
बैठी तले कदम के, ऐसी करी परदेसन ।
ले डारी ऐसी जुदागी, रह्या हरफ न नुकता[2] इन ।।९।।
बैठी हों आगे तुम, जानूं अर्ज करूं कर जोड़ ।
सो उमेद कछू ना रही, कोई ऐसो दियो दिल मोड़ ।।१०।।
ऐसी दई उलटाय के, बैठी हों कदम के पास ।
दरद न कह्यो जाय दिल को, उमेद न रही कछू आस ।।११।।
बैठी तले कदम के, मेरो ए घर धाम धनी ।
ए सुख देखाए जगावत, तो भी होत नहीं जागनी ।।१२।।
बैठी इन मेले मिने, ए घर धनी सुख अखंड ।
आस न केहेन सुनन की, जानो बीच पड़्यो ब्रह्मांड ।।१३।।
धनी धाम सुख बतावत, ए धनी सुख अखंड ।
आप दया बतावत अपनी, आड़े[3] दे ब्रह्मांड पिंड ।।१४।।
जगावत कई जुगतें, दई कई विध साख गवाहे ।
बैठावत सुख अखंड में, तो भी जेहेर जिमी छोड़ी न जाए ।।१५।।
धनी मैं तो सूती नींद में, तुम बैठे हो जाग्रत ।
खेल भी तुम देखावत, बल मेरो कछू ना चलत ।।१६।।
बल बुध न रही कछू उमेद, मेरो कोई अंग चलत नाहें ।
ऐसी उरझाई इन खेल में, एक आस रही तुम माहें ।।१७।।
और आसा उमेद कछू ना रही, और रख्या ना कोई ठौर ।
एता दृढ तुम कर दिया, कोई नाहीं तुम बिना और ।।१८।।
बल बुध आसा उमेद, ए तुम राखी तुम पर ।
मुझ में मेरा कछू ना रह्या, अब क्या कहूं क्योंकर ।।१९।।

१. बहुत दूर । २. बिंदु । ३. परदा ।

स्यामाजीएँ मोहे सुध दई, तब मैं जानी न सगाई सनमंध ।
सुध धनी धाम न आपकी, ऐसी थी हिरदे की अंध ॥२०॥

तब जानों इन बात की, कोई देवे दूजा साख ।
सो हलके[1] हलके देत गए, मैं साख पाई कई लाख ॥२१॥

मैं हुती बीच लड़कपने, तब कछुए न समझी बात ।
मोहे सब कही सुध धाम की, भेख बदल आए साख्यात ॥२२॥

सोई वचन मेरे धनीय के, हाथ कुंजी आई दिल को ।
उरझन सारे ब्रह्मांड के, मैं सुरझाऊं इन सों ॥२३॥

पेहेले पाल न सकी सगाई, ना कर सकी पेहेचान ।
पर हम बीच खेल के, कई पाए धनी धाम निसान ॥२४॥

कई साखें बीच कागदों, मुझ पर आया फुरमान ।
इनमें इसारतें रमूजें, सो मैं ही पाऊं पेहेचान ॥२५॥

मेरे धनी की इसारतें, कोई और न सके खोल ।
सो भी आतम ने यों जानिया, ए जो स्यामाजी कहे थे बोल ॥२६॥

ए सुध हुई त्रैलोक को, सबों जान्या इनों घर धाम ।
मोहे बैठाए बीच दुनी के, दिया ऐसा सुख आराम ॥२७॥

सो बातें मैं केती कहूं, मैं पाई बेसुमार ।
पर एक बात न सुनाई मुख की, अजूं[2] न कछू देत दीदार ॥२८॥

अब ऐसा दिल में आवत, जेता कोई थिर चर ।
सब केहेसी प्रेम धनीय का, कछू बोले ना इन बिगर ॥२९॥

ऐसा आगूं होएसी, आतम नजरों भी आवत ।
जानों बात सुनों मैं धनीय की, पर मोहे अजूं बिलखावत ॥३०॥

ना कछू देखूं दरसन, ना कछू केहेने की आस ।
ना कछू सुध सनमंध की, बैठी हों कदम के पास ॥३१॥

१. आहिस्ते । २. अभी भी ।

धनी एती भी आसा ना रही, जो करूं तुमसों बात ।
ना बात तुमारी सुन सकों, ना देखूं तुमें साख्यात ॥३२॥

एह धनी एह घर सुख, सनमंध दियो भुलाए ।
लगाव न रह्यो एक रंचक, ताथें मेरो कछू न बसाए ॥३३॥

कहा करूं किन सों कहूं, ना जागा कित जाऊं ।
एता भी तुम दृढ़ कर दिया, तुम बिना ना कित ठांऊ ॥३४॥

ना कछू एता बल दिया, जो लगी रहूं पिउ चरन ।
पर ए सब हाथ खसम के, और पुकारूं आगे किन ॥३५॥

रोई तो भी जाहेर, पुकारी जोस खुमार ।
जो देते रंचक[1] बातूनी, तो होती खबरदार ॥३६॥

अब केहेना तो भी तुमको, ठौर तो भी तुम ।
अंगना तो भी धनी की, तुम हो धनी खसम ॥३७॥

आसा उमेद धनी की, बल बुध ठौर धनी ।
पिंड न रह्यो ब्रह्मांड, तुम ही में रही करनी ॥३८॥

जोर कर जुदागी कर दई, और जोर कर जगावत तुम ।
केहेनी सुननी मेरे कछू ना रही, तो क्यों बोलूं मैं खसम ॥३९॥

ऐसे कायम सुख के जो धनी, किन विध दई भुलाए ।
इन दुख में देखावत ए सुख, हिरदे तुम ही चढ़ाए ॥४०॥

ऐसे सुख अलेखे अखंड, भुलाए दिए माहें खिन ।
सुख देखत उनथें अधिक, पर आवे अग्याएं अंतस्करन ॥४१॥

खेल किया हुकम सों, हम आए हुकम ।
हुकमें दरसन देखावहीं, कछू ना बिना हुकम खसम ॥४२॥

हुकमें इस्क आवहीं, कदमों जगावे हुकम ।
करनी हुकम करावहीं, कछू ना बिना हुकम खसम ॥४३॥

१. जरा मात्र ।

हुकम उठावे हँसते, रोते उठावे हुकम ।
हार जीत दुख सुख हुकमें, कछू ना बिना हुकम खसम ॥४४॥

हुआ है सब हुकमें, होत है हुकम ।
होसी सब कछू हुकमें, कछू ना बिना हुकम खसम ॥४५॥

अब ज्यों जानो त्यों करो, कछू रह्या न हमपना हम ।
इन झूठी जिमी में बैठ के, कहा कहूं तुमें खसम ॥४६॥

ए भी दृढ़ तुम कर दिया, सब कछू हाथ हुकम ।
कछू मेरा मुझ में ना रह्या, ताथें कहा कहूं खसम ॥४७॥

जो कहूं कई कोट बेर, तो केहेना एता ही खसम ।
जब कछू तुम ही करोगे, तब केहेसी आए हम ॥४८॥

अब तो केहेना कछू ना रह्या, ऐसी अंतराए करी खसम ।
जब तुम जगाए बैठाओगे, तब केहेसी आए हम ॥४९॥

हम में जो कछू रख्या होता, तो इत केहेते तुमको हम ।
सो तो कछुए ना रह्या, अब कहा कहूं खसम ॥५०॥

भला जो कछू जान्या सो किया, इन झूठी जिमी में आए ।
जब कछू उमेद देओगे, तब कहूंगी आस लगाए ॥५१॥

तुम किया होसी हम कारने, पर ए झूठी जिमी निरास ।
ऐसा दिल उपजे पीछे, क्यों ले मुरदा स्वांस ॥५२॥

एक आह स्वांस क्यों ना उड़े, सो भी हुआ हाथ धनी ।
बात कही सो भी एक है, जो कहूं इन थें कोट गुनी ॥५३॥

महामत कहे मैं सरमिंदी, सब अवसर गई भूल ।
ऐसी इन जुदागी मिने, क्यों कहूं करो सनकूल[1] ॥५४॥

॥प्रकरण॥१॥चौपाई॥५४॥

१. प्रसन्न ।

मैं खुदी काढ़े का इलाज

हम लिए कौल[1] खुदाए के, हक के जो परवान ।
लई कई किताबें साहेदियां, कई हदीसें फुरमान ।।१।।
कई साखें सास्त्रन की, कई साखें साधों की बान ।
ए ले ले रूह को दृढ़ करी, आखिर वसीयत नामें निदान ।।२।।
जाहेर बाहेर बातून, अंदर अन्तर तुम ।
कहूं जरे जेती जाएगा, नहीं खाली बिना खसम ।।३।।
सब ठौरों सुध तुमको, कछू छूट न तुम इलम ।
ए सक मेट बेसक तुम करी, कछू न बिना हुकम खसम ।।४।।
जरा न हुकम सुध बिना, सबन के दम दम ।
साइत ना खाली पाइए, बिना हुकम खसम ।।५।।
एते दिन मैं यों जान्या, मैं बैठी नाहीं के माहें ।
तो इत का संदेसा, हक को पोहोंचत नाहें ।।६।।
सो तेहेकीक[2] तुम कर दिया, जो खेल नूर से उपजत ।
इलम खुदाई हुकम बिना, कहूं खाली न पाइए कित ।।७।।
सांच झूठ बड़ी तफावत, ज्यों नाहीं और है ।
सो हुकमे खेल बनाए के, सत गिरो को देखावें ।।८।।
बनाए कबूतर खेल के, ज्यों देखावे दुनियां को ।
यों देखावें सत गिरो को, ए जो पैदा कुंन सों ।।९।।
हम बैठे वतन कदम तले, तहां बैठे खेल देखत ।
तित ख्वाब से संदेसा, तुमें क्यों ना पोहोंचत ।।१०।।
ए इलम हकें दिया, किया नाहीं थें मुकरर[3] हक ।
रूहअल्ला महंमद मेहेर थें, कहूं जरा न रही सक ।।११।।

१. वचन । २. निश्चित । ३. स्थापित ।

हम बैठे लैलत-कदर[1] में, संदेसा पोहोंचावें तुम ।
इलम सूरत हमारी रूह की, पोहोंची चाहिए खसम ॥१२॥

ए तेहेकीक[2] तुम कर दिया, मैं तो बैठी बीच नाहें ।
इन विध खेल खेलावत, हक नाहीं के माहें ॥१३॥

अब धनी जानो त्यों करो, पर इत कहूं कहूं रूह तरसत ।
कोई कोई चाह जो उठत है, सो हकै उपजावत ॥१४॥

मैं तो बीच नाहीं के, मोहे खेल देखाया जड़ मूल ।
ताथें जानो त्यों करो, सरमिंदी या सनकूल[3] ॥१५॥

अब क्या करूं किन सों कहूं, कोई रह्या न केहेवे ठौर ।
ए भी कहावत तुमहीं, कोई नाहीं तुम बिना और ॥१६॥

बिन फुरमाए हक के, दिल जरा न उपजत ।
तो क्यों दिल ऐसा आवत, जो हक मांग्या ना देवत ॥१७॥

हक उपजावत देवे को, सो हकै देवनहार ।
मैं दोष हक का देख के, क्यों होत गुन्हेगार ॥१८॥

उपजे उपजावे सब हक, हक देवें दिलावें ।
मैं जो करत गुन्हेगारी, सो बीच काहे को आवे ॥१९॥

हकें पोहोंचाई इन मजलें, और दोष हक को देवत ।
एही मैं मारी चाहिए, जो बीच करे हरकत[4] ॥२०॥

मैं तो बीच नाहीं मिने, सो हक को पोहोंचत नाहें ।
सो बीच दिल के बैठ के, गुनाह देत रूह के तांए ॥२१॥

मैं मैं करत मरत नहीं, और हक को लगावे दोस ।
अब मेहेर हक ऐसी करें, जो इन मैं थें होऊं बेहोस ॥२२॥

झूठ न भेदे सांच को, सांच अंग सत साबित ।
बाहेर उपली अंधेर देखाए के, होए जात असत ॥२३॥

१. मोह की रात । २. निश्चित । ३. प्रसन्न । ४. बाधा

ए जो फना सब झूठ है, जो ऊपर से देखाया ।
सो क्यों भेदे हक को, जो नाहीं असत माया ॥२४॥
सत को सत भेदत है, बीच झूठ के हक ।
ए सन्देसा तब पोहोंचही, जब रूह निपट होए बेसक ॥२५॥
ए सांच सन्देसा हक को, तोलों ना पोहोंचत ।
गेहेरा जल है मैंय[1] का, आड़ा जो असत ॥२६॥
सो मैं मैं झूठी दिल पर, जब लग करे कुफर ।
सत सन्देसा तौहीद[2] को, तोलों पोहोंचे क्यों कर ॥२७॥
ए मैं मैं क्यों ए मरत नहीं, और कहावत है मुरदा ।
आड़े नूर-जमाल के, एही है परदा ॥२८॥
ए पट नीके पाइया, जो मैं को उड़ावे कोए ।
ए दृढ़ हकें कर दिया, अब जुदा हक से होए ॥२९॥
मारा कह्या काढ़ा कह्या, और कह्या हो जुदा ।
एही मैं खुदी टले, तब बाकी रह्या खुदा ॥३०॥
पेहेले पी तूं सरबत मौत का, कर तेहेकीक मुकरर[3] ।
एक जरा जिन सक रखे, पीछे रहो जीवत या मर ॥३१॥
एही पट आड़े तेरे, और जरा भी नाहें ।
तो सुख जीवत अर्स का, लेवे ख्वाब के माहें ॥३२॥
ए सुन्या सीख्या पढ़्या, कह्या विचार्या विवेक ।
अब जो इस्क लेत है, सो भी और उड़ाए पावने एक ॥३३॥
तो सोहोबत तेरी सत हुई, सांचा तूं मोमिन ।
सब बड़ाइयां तुझ को, जो पोहोंचे मजल इन ॥३४॥
महामत कहे ए मोमिनों, सुनो मेरे वतनी यार[4] ।
खसम करावे कुरबानियां, आओ मैं मारे की लार[5] ॥३५॥

॥प्रकरण॥२॥चौपाई॥८९॥

१. अहं । २. अद्वैतवाद । ३. निश्चित । ४. मित्र । ५. कतार, पंक्ति ।

मैं बिन मैं मरे नही, मैं सों मारना मैं ।
किन विध मैं को मारिए, या विध हुई इनसे ।।१।।
और भी हकीकत मैंय की, जिन विध मरे जो ए ।
सो ए खसम बतावत, बल अपने इलम के ।।२।।
अब मैं मरत है इन विध, और न कोई उपाए ।
खुदाई इलम सों मारिए, जो हकें दिया बताए ।।३।।
जो मैं मारत अव्वल, तो कौन सुख लेता ए ।
है नाहीं[१] के फरेब[२] में, सुख नूर पार का जे ।।४।।
मैं दुनी की थी सो मर गई, इन मैं को मार्‌या मैं ।
अब ए मैं कैसे मरे, जो आई है खसम से ।।५।।
मैं चल आई कदमों, ऐसा दिया बल तुम ।
इन विध मैं मरत है, ना कछू बिना खसम ।।६।।
जो मैं मारत आपको, तो आवत कौन कदम ।
मैं ना होने में कछू ना रह्‌या, किया कराया खसम ।।७।।
ना मैं अव्वल ना आखिर, मैं नाहीं बीच में ।
बन्या बनाया आप ही, सो सब तुम हीं से ।।८।।
मैं तो तुमारी कीयल[३], अव्वल बीच और हाल[४] ।
तुम बिना जो कछू देखत, सो सब मैं आग की झाल ।।९।।
जब लग मैं ना समझी, तब लग थी मैं मैं ।
समझे थें मैं उड़ गई, सब कछू हुआ तुम से ।।१०।।
अव्वल आखिर सब तुम, बीच में भी तुम ।
मैं खेली ज्यों तुम खेलाई, खसम के हुकम ।।११।।
इन मैं को तो तुम किया, आद मध्य और अब ।
और मैं तो नेहेचे नहीं, कितहूं न देखी कब ।।१२।।

१. माया, मिट जाने वाली । २. छल । ३. खडी की गई । ४. अब ।

केहेत केहेलावत तुम ही, करत करावत तुम ।
हुआ है होसी तुमसे, ए फल खुदाई इलम ॥१३॥

अब ए मैं जो हक की, खड़ी इलम हक का ले ।
चौदे तबक किए कायम, सो भी मैं है ए ॥१४॥

ए मैं है हक की, ए है हक का नूर ।
खास गिरो जगाए के, पोहोंचत हक हजूर ॥१५॥

ए मैं इन विध की, सो मैं मरे क्योंकर ।
पोहोंचे पोहोंचावे कदमों, जाग जगावे घर ॥१६॥

एही मैं है हुकम, एही मैं नूर जोस ।
एही मैं इलम हक का, एही मैं हक करे बेहोस ॥१७॥

हक चलाए चल हीं, हक बैठाए रहे बैठ ।
सोवे उठावे सब हक, नहीं हुकम आड़े कोई ऐंठ[1] ॥१८॥

रोए हँसे हारे जीते, ईमान या कुफर ।
जरा न हुकम सुध बिना, बंदगी या मुनकर[2] ॥१९॥

ए जो मैं हक की, सो भी निकसे हक हुकम ।
इन मैं में बंधन नहीं, बंधाए जो होवे हम ॥२०॥

हम बंधे बंधाए मिट गए, कछू रह्या न हमपना हम ।
यों पोहोंचाई बका मिने, इन विध मैं को खसम ॥२१॥

अब सिर ले हुकम हक का, बैठी धनी की मैं ।
जरा इन में सक नहीं, इलम हक के सें ॥२२॥

जुदे सब थें इन विध, इन विध सब में एक ।
साँच झूठ के खेल में, ए जो बेवरा कह्या विवेक ॥२३॥

हुकम जोस नूर खसम, मैं ले खड़ी इलम ए ।
ए पांचों काम कर हक के, पोहोंचे गिरो दोऊ ले ॥२४॥

१. घमंड, अकड । २. न मानना ।

ए सातों भए इन विध, पोहोंचे बका में जब ।
आप उठ खड़े हुए, पीछे खेल कायम किया सब ॥२५॥
मैं तो तेहेकीक न कछू, और न कछू मुझसे होए ।
ए मैं विध विध देखिया, इन मैं में खतरा न कोए ॥२६॥
मैं ना अव्वल ना बीच में, ना कछू मैं आखिर ।
किया कराया करत हैं, सो सब हक कादर ॥२७॥
ए तेहेकीक हकें कर दिया, हकें लई कदम ।
बुलाई अपना इलम दे, कर विध विध रोसन हुकम ॥२८॥
हकें गिरो बुलाई मोमिन, हकें कराई सोहबत ।
नूर पार वचन विध विध के, हकें दई नसीहत[1] ॥२९॥
मैं नाहीं न जानों कछुए, मैं नाहीं जरा रंचक ।
हकें इलम जोस देय के, करी सो हुकमें हक ॥३०॥
हकें किया हक करत हैं, और हकै करेंगे ।
ए रूह को तेहेकीक भई, और नजरों भी देखे ॥३१॥
ए सब हक करत हैं, कौल फैल या हाल ।
और मुझ में जरा न देखिया, बिना नूर जमाल ॥३२॥
अब इन बीच में खतरा, हक न आवन दे ।
जिन दिल अर्स खावंद, तित क्यों कर कोई मूसे[2] ॥३३॥
दूजा तो कोई है नहीं, ए जो माया मन दज्जाल ।
इलम देखे ए ना कछू, इत जरा नहीं जवाल[3] ॥३४॥
जब हकें इलम ए दिया, तेहेकीक रूह को तुम ।
कर मनसा वाचा करमना, कोई ना बिना खसम हुकम ॥३५॥
ज्यों ज्यों एह विचारिए, त्यों तेहेकीक होता जाए ।
इत जरा नूर-जमाल बिना, रूह में कछू न समाए ॥३६॥

१. सिखापन । २. निराश होना । ३. नुकसान, पतन ।

रूहें तन हादीय का, हादी तन हैं हक ।
नूर तन नूर-जमाल का, इत जरा नाहीं सक ॥३७॥

ए मैं तैं सब हक की, ए इलम अकल धनी ।
नूर जोस हुकम हक का, या विध है अपनी ॥३८॥

एह खेल हकें किया, आप भी संग इत आए ।
अर्स में बैठे देखाइया, ऐसा खेल बनाए ॥३९॥

भुलाए वतन आप खसम, खेल देखाए के जुदागी ।
मेहेर करी इन विध की, बैठे खेलै में जागी ॥४०॥

जगाए लई रूहें अपनी, कदमों जो असल ।
यामें संदेसा कहे, इत बैठे हैं सामिल ॥४१॥

इत ना मैं आई ना फिरी, ए तो हुकमें किया पसार[1] ।
ए मैं हुकमें मैं करी, अब हुकम देत मैं मार ॥४२॥

जब लग मैं सुपने मिने, नहीं खसम पेहेचान ।
तब लग मैं सिर अपने, बोझ लिया सिर तान ॥४३॥

अब खसम ख्वाब की सुध परी, और सुध परी हुकम ।
तब मैं में जरा ना रही, मैं बैठी तले कदम ॥४४॥

इलम खुदाई ना होता, तो क्यों संदेसा पोहोंचत ।
नूर-तजल्ला के अन्दर की, कौन इसारतें खोलत ॥४५॥

सब मेयराज की इसारतें, कौन साहेदी कलमें[2] देत ।
जो अर्स अरवाहें इत ना होती, तो मता[3] खिलवत का कौन लेत ॥४६॥

चौथे आसमान लाहूत में, रूहअल्ला बसत ।
पेहेले बताई फुरकानें, सो मोमिन भेद जानत ॥४७॥

कुन्जी नूर के पार की, रूहअल्ला दई मुझ ।
केहे बातून मगज मुसाफ का, करों जाहेर जो है गुझ ॥४८॥

१. विस्तार । २. वचन । ३. पूंजी ।

जो रखे रसूलें हुकमें, और सबन थें छिपाए ।
सो मोको कुंजी देय के, कौल पर जाहेर कराए ॥४९॥

तो गुनाह अर्स अजीम में, लिख्या सब मेयराज के माहें ।
करें जाहेर अर्स दिल मोमिन, जित जबराईल पोहोंच्या नाहें ॥५०॥

ए मैं बोले जो कछू, सो संदेसा रूहअल्ला जान ।
ए इलम हकीकत वतनी, कहूं हक बिना न पेहेचान ॥५१॥

हक पैगाम[१] भेजत है, सो देत साहेदी कुरान ।
दे साहेदी खुदा खुदाए की, सो खुदाई करे बयान ॥५२॥

सो भी रूह साहेदी देत है, जो नूर-जलाल पास नाहें ।
सो रोसनी नूरजमाल की, लज्जत आवत मोमिनों माहें ॥५३॥

जब लग ख्वाब नजरों, तब लों देत देखाई यों कर ।
ना तो सुख नूर-जमाल को, बैठे लेवें कायम घर ॥५४॥

इलहाम[२] आवत परदे से, सो नाहीं चौदे तबक ।
सो मोमिन इन ख्वाब में, लेत सुख बेसक ॥५५॥

झूठ न सुन्यो कबूं इत थें, जिन करो झूठी उमेद ।
ए गुझ हक के दिल का, आवत तुमको भेद ॥५६॥

आवत संदेसे परदे से, बीच गिरो मोमिन ।
क्यों ना विचारो अकल सों, कर पाक दिल रोसन ॥५७॥

इतथें अर्ज भेजत हैं, सो पोहोंचत हैं हक को ।
जो असल अकलें विचारिए, तो आवे दिल मों ॥५८॥

तेहेकीक[३] अर्ज पोहोंचत है, जो भेजिए पाक दिल ।
ऐसी पोहोंचाई हक ने, दिल पोहोंचे मोहोल[४]-असल ॥५९॥

ए जो पाक दिलें विचारिए, देखो आवत इलहाम[५] ए ।
पर उपली[६] नजरों न देखिए, ए जो पोहोंचत हकीकत जे ॥६०॥

१. संदेशा । २. ब्रह्म आदेश । ३. निश्चित । ४. महल (परमधाम) । ५. आकाश वानी । ६. ऊपर की ।

आवत जात जो खबरें, सो परदे से देखत ।
बैठी तले कदम के, लेवत एह लज्जत ।।६१।।
महामत कहे मैं हक की, पोहोंची बका में ।
ए मैं असल अर्स की, ए मैं मोमिनों हक से ।।६२।।

।।प्रकरण।।३।।चौपाई।।१५१।।

ज्यों जानो त्यों रखो, धनी तुमारी मैं ।
ए केहेने को भी ना कछू, कहा कहूं तुमसे ।।१।।
कछू कछू दिल में उपजत, सो भी तुमहीं उपजावत ।
दिल बाहेर भीतर अंतर, सब तुम हीं हक जानत ।।२।।
जो लों रखी तुम होस में, तब लग उपजत ए ।
ए मैं मांगे तुमारी तुम पे, तुम मंगावत जे ।।३।।
मैं मांगत डरत हों, सो भी डरावत हो तुम ।
मैं मांगे तुमारी तुम पे, ना तो क्यों डरे अंगना खसम ।।४।।
हजरत ईसे मांगया, हक अपनायत कर ।
तिन पर ए गुनाह लिख्या, ए देख लगत मोहे डर ।।५।।
फुरमान देख के मैं डरी, देख रूहअल्ला पर गुना ।
ए खासी रूह खुदाए की, मोमिनों रह्या न आसंका ।।६।।
तो डर बड़ा मोहे लगत, जो गुनाह कह्या इन पर ।
माफक रूह अल्लाह के, कोई मरद नहीं बराबर ।।७।।
ए खावंद है अर्स अजीम का, हादी हमारा सोए ।
इस मानंद[1] चौदे तबक में, हुआ न होसी कोए ।।८।।
मैं नेक बात याकी कहूं, पाक रूहों सुनो सब मिल ।
मैं की खुदी सखत है, ए लीजो देकर दिल ।।९।।

१. तुल्य ।

रूहअल्ला करी बन्दगी, तिन में उनकी मैं ।
तो गुनाह कह्या इन पर, इन मैं मांग्या हक पे ॥१०॥

मेरे ना कछू बन्दगी, ना कछू करी करनी ।
ओ मैं मुझमें ना रही, ए तो मैं हकें करी अपनी ॥११॥

मैं थी बीच लड़कपने, धनी तुमारी पढ़ाएल ।
मेरे उमेद न आसा बंदगी, हक तुमारी निवाजल[1] ॥१२॥

मैं जो मांगी बेखबरी, सो उमेद पूरी सब तुम ।
तब उस खुदी की मैं को, दिल चाह्या दिया हुकम ॥१३॥

अब मांगूं सिर हुकम, हुज्जत लिए खसम ।
अब क्यों न होए सो उमेद, दिया हाथ हुकम ॥१४॥

खसम खसम तो करत हों, पर खसम न आवत भार ।
ना हुज्जत रूह अर्स की, तो होत ना दिल करार ॥१५॥

जो मांगूं हक जान के, अर्स रूह कर हुज्जत ।
तो तब हीं उमेद पोहोंचहीं, जो दिल में यों उपजत ॥१६॥

जैसा हक है सिर पर, तैसा तेहेकीक जानत नाहें ।
बिसर जात है नींद में, दृढ़ होत न ख्वाब के माहें ॥१७॥

जो मांग्या है ख्वाब में, सो हकें पूरा सब किया ।
सो बोहोत ना मोहे सुध परी, जो ख्वाब के मिने दिया ॥१८॥

जो मैं मांगूं जाग के, और जागे ही में पाऊं ।
तो कारज सब सिद्ध होवहीं, जो फैलें नींद उड़ाऊं ॥१९॥

ए जो नींद उड़ाई कौल में, जो कदी फैल[2] में उड़त ।
तो निसबत इन की हक सों, आवत अर्स लज्जत ॥२०॥

जो पाइए इत लज्जत, तो होवे सब विध ।
कायम सुख इन अर्स के, सब काम होवें सिध ॥२१॥

१. कृपा पात्र । २. करम ।

तो न पाइए इत लज्जत, जो फैल[1] न आवत हाल[2] ।
हाल आए क्यों सेहे सके, बिछोहा नूर-जमाल ॥२२॥

ऐसा हक है सिर पर, कर दई हक पेहेचान ।
ऐसी हक की मैं जोरावर, क्यों रहे दीदार बिन प्रान ॥२३॥

ए जो मैं खुदाए की, क्यों रहे दीदार बिन ।
क्यों रहे सुने बिना, मीठे पिउ के वचन ॥२४॥

एक पल जात पिउ दीदार बिना, बड़ा जो अचरज ए ।
ए जो मैं है हक की, सो क्यों खड़ी बिछोहा ले ॥२५॥

छल में आप देखाइया, दिया अपना इलम ।
मैं आप पेहेचान ना कर सकी, न कछू चीन्ह्या खसम ॥२६॥

धनी मेरा अर्स का, मैं तुमारी अरधंग ।
भेख बदल सुनाए वचन, दिया दीदार बदल के अंग ॥२७॥

मैं बीच फरामोसी के, तुम आए सूरत बदल ।
पेहेचान क्यों कर सकूं, इन वजूद की अकल ॥२८॥

तालब[3] तो भी तुमसे, इस्क नहीं तुम बिन ।
सब्द सुख भी तुमसे, तुमहीं दिया दरसन ॥२९॥

ए उपजावत तुमहीं, तुमहीं दिखलावत ।
तुमहीं खेल खेलावत, तुमहीं समें बदलत ॥३०॥

मैं को तुम खड़ी करी, मैं को देखाई तुम ।
मैं को तले कदम के, खड़ी राखी माहें हुकम ॥३१॥

तुमहीं साथ जगाइया, तुम दई सरत देखाए ।
तुमहीं तलब[4] करावत, तो दरसन को हरबराए[5] ॥३२॥

तुमहीं दिल में यों ल्यावत, मैं देखों हक नजर ।
सो पट तुमहीं से खुले, तुमसे टले अन्तर ॥३३॥

१. करम । २. दशा (भावनाएँ) । ३. याचना - मांग । ४. चाहना । ५. व्याकुल हुए ।

श्रवनों सब्द सुनाए के, दिल दीदे[१] दीदार ।
अनेक हक मेहेरबानगी, सो कहां लो कहूँ सुमार ॥३४॥

जोस इस्क और बंदगी, चलना हक के दिल ।
ए बकसीस सब तुम से, खुसबोए वतन असल ॥३५॥

और कई इनाएतें[२] तुम से, सो कहाँ लो कहूं वचन ।
सो कई आवत हैं नजरों, पर कह्यो न जाए सुकन ॥३६॥

मैं अपनी अकलें केती कहूं, तुम करावत सब ।
बाहेर अंदर अन्तर, या तबहीं या अब ॥३७॥

जानो तो राजी[३] रखो, जानो तो दलगीर[४] ।
या पाक करो हादीपना[५], या बैठाओ माहें तकसीर[६] ॥३८॥

अब मेरा केहेना ना कछू, तुमहीं केहेलावत ए ।
मेरे कहे मैं रेहेत है, पर सब बस हुकम के ॥३९॥

अब सब के मन में ए रहे, इत दिल चाह्या होए ।
तो पाइए खेल खुसाली, हक जानत सब सोए ॥४०॥

ए भी तुम केहेलावत, कारन उमत के ।
अर्स वजूद के अंतर में, तुम पेहेले उपजावत ए ॥४१॥

असल हमारी अर्स में, ताए ख्वाब देखावत तुम ।
जैसा उत ओ देखत, तैसा करत हैं हम ॥४२॥

इन विध गुनाह हम पर, लागत नाहीं कोए ।
मैं तो इत नाहीं कितहूं, इत उत किया हक का होए ॥४३॥

भुलाए दिया तुम हम को, आप वतन खसम ।
ताथें खुदी मैं ले खड़ी, झूठे खेल में आतम ॥४४॥

आप छिपाया तुम हम सें, झूठे खेल में डार ।
फेर कर तुम खड़ी करी, करके गुन्हेगार ॥४५॥

१. हृदय की आँखे । २. कृपाएँ । ३. प्रसन्न चित्त । ४. दिल को दुःखी करना । ५. अपनी पनाह(शरण) में रखना । ६. दोषी ।

फेर तुम हमको अकल दई, मैं खुदी पकड़ी सोए ।
जो जैसी करेगा, तैसी पावेगा सोए ॥४६॥

आप भी भेख बदल के, आए अपना दिया इलम ।
सब बातें कही वतन की, पर पेहेचान न सकें हम ॥४७॥

इत भी गुनाह सिर पर हुआ, याद न आया असल ।
तुम रोए लरखीज कह्या, तो भी रही न मूल अकल ॥४८॥

यों गुनाह अनेक भांत का, हुआ हमारे सिर ।
हम कछू न कर सके, तो भी खबर लई हकें फेर ॥४९॥

कई सुख हमको अर्स के, भांत भांत दिए अपार ।
तो भी नींद हमारी न गई, इत भी हुए गुन्हेगार ॥५०॥

कर मनसा वाचा करमना, सब अंगों कर हेत ।
केहे केहे हारे हमसों, पर मैं न हुई सावचेत ॥५१॥

यों कई गुनाह केते कहूं, सब ठौरों गई भूल ।
कई देखाए गुन अपने, ताको तौल न मोल ॥५२॥

सो गुन देखे में नजरों, जिनको नहीं सुमार ।
तो भी पेहेचान न हुई, ना छूटी नींद विकार ॥५३॥

पीछे आप जुदे होए के, भेज दिया फुरमान ।
सो पढ़्या मैं भली भांत सों, करी सब पेहेचान ॥५४॥

सो कुन्जी दई हाथ मेरे, कोई खोले न मुझ बिन ।
सक्त नहीं त्रैलोक को, न कछू सक्त त्रैगुन ॥५५॥

इन विध गुन केते कहूं, कई देखे मैं नजर ।
मेरे हाथ खुलाए के, करी ब्रह्मांड में फजर ॥५६॥

कई लिखी इसारतें अर्स की, कई रमूजें[1] अनेक ।
पेहेले पढ़ाई मुझ को, मैं ही खोलूं एही एक ॥५७॥

१. भेद ।

महामत कहे मैं हक की, खोले मगज मुसाफ कलाम ।
और हक कलाम कौन खोल सके, जो मिले चौदे तबक तमाम ॥५८॥

॥प्रकरण॥४॥चौपाई॥२०९॥

रूहों को कुदरत[1] देखाई हक ने

यों कई देखाई माया, और कई विध कराई पेहेचान ।
कई विध बदली मजलें, कई पुराए साख निसान ॥१॥

हक की बातें अनेक हैं, कही न जाए या मुख ।
इन झूठे खेल में बैठाए के, कई दिए कायम सुख ॥२॥

मैं पेहेले केहेनी कही, किया काम दुनी का सब ।
पर एक फैल रेहेनीय का, लिया न सिर पर तब ॥३॥

अब आया बखत रेहेनीय का, रात मेट हुई फजर ।
अब केहेनी रेहेनी हुआ चाहे, छोड़ दुनी ले अर्स नजर ॥४॥

अब समया आया रेहेनीय का, रूह फैल को चाहे ।
जो होवे असल अर्स की, सो फैल ले हाल देखाए ॥५॥

केहेनी कही सब रात में, आया फैल हाल का रोज ।
हक अर्स नजर में लेय के, उडाए देओ दुनी बोझ ॥६॥

जो हकें केहेलाया सो कह्या, इत मैं बीच कहूं नाहें ।
फैल हाल सब हक के, हकें सक मेटी दिल माहें ॥७॥

इलम दिया हकें अपना, और दई असल अकल ।
जोस इस्क सब हक के, सब उमत करी निरमल ॥८॥

इन जड़ थें तब मैं निकसी, जब आकीन दिया आप ।
सकें सारी भान के, तुम साहेब किया मिलाप ॥९॥

ए मैं काढ़ी तुम इन विध, इन मैं में न आवे सक ।
यों काढ़ी खुदी मैं साथ की, हकें किए आप माफक ॥१०॥

१. माया ।

हुकमें हाथ पकड़ के, दिया फैल हाल बेसक ।
तब जोस इस्क देखाया, जासों पाया हक ॥११॥

जोस हाल और इस्क, ए आवे न फैल हाल बिन ।
सो फैल हाल हक के, बिना बकसीस न पाया किन ॥१२॥

कलाम हक जुबान के, तिनका कहूं विवेक ।
इन केहेनी से कायम हुए, दुनी पाया हक एक ॥१३॥

जिन केहेनी किल्लीय से, खुल्या भिस्त का द्वार ।
सो केहेनी छुड़ाई हुकमें, दे फैल रेहेनी सार ॥१४॥

ए जो केहेनी इन भांत की, किए कायम चौदे तबक ।
सो छुड़ाई केहेनीय को, जासों पाया दुनियां हक ॥१५॥

कहे हुकम आगे रेहेनीय के, केहेनी कछुए नाहें ।
जोस इस्क हक मिलावहीं, सो फैल हाल के माहें ॥१६॥

दुनियां केहेनी केहेत है, सो डूबत मैं सागर ।
मैं लेहेरें मेर[१] समान में, कोई निकस न पावे बका घर ॥१७॥

ए खेल मोहोरे[२] कथ कथ गए, सो जले खुदी बेखबर ।
आप लेहेरें माहें अपनी, गोते खात फेर फेर ॥१८॥

ओही उनों का किबला[३], छोड़ें नाहीं ख्याल ।
मैं मैं करत मरत नहीं, इनके एही फैल हाल ॥१९॥

अब कैसी मैं बीच खेल के, जो खेलत कबूतर ।
ए जो नाबूद[४] कछूए नहीं, तो मैं केहेत क्यों कर ॥२०॥

खेल किया तुम वास्ते, जो देखत बैठे वतन ।
सो देख के उड़ावसी, जिन विध झूठ सुपन ॥२१॥

जो रूहें होए अर्स की, सो तो तले हुकम ।
जानत त्यों खेलावत, ऊपर बैठ खसम ॥२२॥

१. मेरु पर्वत । २ संसारी जीव । ३. पूजास्थान । ४. ना चीज, नश्वर ।

इन में भी मैं है नहीं, जो ए समझें मूल इलम ।
फैल हाल इस्क लेवहीं, तब हक की मैं आतम ॥२३॥

तब गुनाह कछू ना लगे, जो कीजे ऐसी चाल ।
सो सुकन पेहेले कहे, जो कोई बदले हाल ॥२४॥

इन विध मैं मरत है, बैठे तले कदम ।
जोस इस्क आवे हाल में, लेय के हक इलम ॥२५॥

जो सुध मलकूत में नहीं, ना सुध नूर वतन ।
सो गिरो दिल पूरन भई, मैं काढ़ी बकसीस[1] इन ॥२६॥

इन मैं को हक बिना, कबहूं न काढ़ी जाए ।
सो मुझ पर मेहेर हकें करी, मैं जरे[2] को देत उड़ाए ॥२७॥

ना तो ए मैं ऐसी नहीं, जो निकसे किए उपाए ।
मेहेनत कर त्रिगुन थके, कोई सके न मैं को फिराए ॥२८॥

ए दुनियां चौदे तबक में, किन जान्यो न मैं को बल ।
किन मैं को पार न पाइया, कई दौड़ाए थके अकल ॥२९॥

इन मैं में डूब्या सब कोई, याको पार न पावे कोए ।
याको पार सो पावहीं, जाको मुतलक[3] बकसीस होए ॥३०॥

ए बानी मैं मारेय की, सुनी होए मोमिन ।
दुनी तरफ की जीवती, कबहूं न रेहेवे इन ॥३१॥

ए मैं इन गिरोह की, काढ़े एक धनी धाम ।
ए मरे पेड़ से हुकमें, ले साहेब के कलाम ॥३२॥

इलम खुदाई लदुन्नी, बकसीस असल रोसन ।
जोस इस्क ले बंदगी, निसबत असल वतन ॥३३॥

अब यों हक को याद कर, ले हुकम सिर चढ़ाए ।
ए हक बिना मैं दुनीय की, सो सब मैं देऊं उड़ाए ॥३४॥

१. तारतम ज्ञान की कृपा । २. धरती का कण । ३. पूर्णतः ।

इत मैं नेक न आवहीं, खड़े हुकम तले जे ।
ए मैं हक की मेहेर लेय के, कर निसंक हिदायत[1] ए ॥३५॥

ए सुनियो खास उमत, इन मैं को काढ़ो जड़ मूल ।
ले साहेदी लदुन्नीय[2] से, कौल ईसा इमाम रसूल ॥३६॥

हकें किया हुकम वतन में, सो उपजत अंग असल ।
जैसा देखत सुपन में, ए जो बरतत इत नकल ॥३७॥

ए करो तेहेकीक विचार के, जो होए अर्स उमत ।
यों असल में हक जगावत, तैसा बदलत बखत ॥३८॥

कहे लदुन्नी भोम तलेय की, हक बैठे खेलावत ।
तैसा इत होता गया, जैसा हजूर हुकम करत ॥३९॥

मोहे दिया लदुन्नी[2] रूहअल्ला, सो मैं कह्या बेवरा कर ।
ए किया उमत कारने, जो विचारो दिल धर ॥४०॥

ए रसूल अर्स अजीम से, ले आया फुरमान ।
मैं जो कह्या तुमें लदुन्नी, सो जोड़ देखो निसान ॥४१॥

कहे विध विध की साहेदी, या फुरमान या हदीस ।
और भेजे नामे वसीयत, सो गिरो पर बकसीस ॥४२॥

इत तीन सूरत आए मिली, भांत भांत साहेदी ले ।
सो लगाए देखो तुम रूह सों, ए इलम लदुन्नी जे ॥४३॥

एह करत सब हुकम, ले अव्वल से आखिर ।
इत मैं बीच काहू में नहीं, मैं ल्यावे सो काफर ॥४४॥

विचार देखो इप्तदाए[3] से, ले अपना तारतम ।
आपन सोवत हैं नींद में, खेल खेलावत खसम ॥४५॥

ए जो सूते तुम देखत हो, खसम देखावत ख्याल ।
सो अब हीं देत उड़ाए के, होसी हाँसी बड़ी खुसाल ॥४६॥

१. आदेश । २. तारतम (ब्रह्मवाणी) । ३. आद से ।

अब मैं काहू में नहीं, ए जो लेत सिर मैं ।
ए हाँसी होसी ज्यों कर, जो करत हैं मैं तैं ॥४७॥

ताथें जो मैं हक की, रहत तले हुकम ।
मैं दुनी की मार के, रही देख खेल खसम ॥४८॥

ताथें मैं इन धनी की, करत हक का काम ।
ए खेल खुसाली लेय के, जाग बैठे इत धाम ॥४९॥

ए सब लेवे रोसनी, पेहेचान के निसबत ।
ए मैं बका हक की, करे हिदायत[1] महामत ॥५०॥

॥प्रकरण॥५॥चौपाई॥२५९॥

पंच रोशनी का मंगला चरन

गैब[2] बातें मेहेबूब की, बीच बका खिलवत ।
हकें भेजी मुझ ऊपर, रूह-अल्ला ल्याए न्यामत[3] ॥१॥

रूह-अल्ला आया रूहन पर, उतर चौथे आसमान ।
सब सुध लाहूती ल्याइया, जो लिख्या बीच फुरमान ॥२॥

इलम लदुन्नी[4] हक का, कुन्जी बका की जे ।
मेहेर करी मुझ ऊपर, खोल दिए पट ए ॥३॥

मोसों मिलाप कर कह्या, मैं आया रूहन पर ।
अरवाहें जेती अर्स की, तिन बुलावन खातिर ॥४॥

मोहे कह्या तेरी रूह, आई अर्स अजीम सों ।
कुन्जी देत हों तुझको, पट खोल दे सब को ॥५॥

न्यामत ल्याए सब रात में, लैलत-कदर[5] के माहें ।
बुलाए ल्याओ रूहें फजर को, वतन कायम है जांहें ॥६॥

अर्स चौदे तबकों, नजर न आवत किन ।
सो सेहेरग से नजीक, देखाया बका वतन ॥७॥

१. आदेश । २. छिपी । ३. अलौकिक देन । ४. तारतम ज्ञान । ५. मोह की रात ।

एह इलम जिन आइया, सेहेरग[1] से नजीक ताए ।
ए पट नजरों खोल के, लिए अर्स में बैठाए ।।८।।

ए नेक हकीकत केहेत हों, है बात बिना हिसाब ।
सो जाने जो लेवे कुन्जी, खोले माएने मगज किताब ।।९।।

सब किताबन की, जब पाई हकीकत ।
तब तिन सब जाहेर हुई, महंमद हक मारफत ।।१०।।

एह न्यामत जब आई, तब खुले सब द्वार ।
जो पट कानों ना सुने, सो खोले नूर के पार ।।११।।

बादल रूह-अल्लाह का, बरस्या वतनी नूर ।
अर्स बका का नासूत[2] में, हुआ सब जहूर ।।१२।।

जब थें दुनी पैदा हुई, अब लग थें अव्वल ।
बका पट किने न खोल्या, कई गए ब्रह्मांड चल ।।१३।।

अव्वल पैदा होए के, दुनी हो जात फना ।
तिनमें कछुए ना रहे, ज्यों उड़ जात सुपना ।।१४।।

ऐसे खेल कई हुए, सो फना ही हो जात ।
एक जरा बाकी ना रहे, कोई करे न बका[3] की बात ।।१५।।

दौड़े कई पैगंमर, कई तीर्थंकर अवतार ।
अव्वल से आखिर लग, किन खोल्या न बका द्वार ।।१६।।

चौदे तबकों बका का, कोई बोल्या न एक हरफ ।
तो ए क्यों पावे हक सूरत, किन पाई न बका तरफ ।।१७।।

जो हक पैदा होए नासूत में, तो होय सबे हैयात ।
इलम अपना देय के, करें जाहेर बका बिसात[4] ।।१८।।

सो इलम रूहअल्ला, ले आया हक का ।
सेहेरग से नजीक देखाए के, माहें बैठावत बका ।।१९।।

१. दिल की बड़ी रक्त नाड़ी - शाहरग । २. मृतलोक । ३. अखंड । ४. वस्तुएँ ।

ए बात सुनो तुम मोमिनों, अपनी कहूं बीतक ।
मेहेर करी मुझ ऊपर, ए इलम खुदाई बेसक ॥२०॥

कौल अलस्तो-बे-रब का, किया रूहों सों जब ।
हक इलम से देखिए, सोई साइत है अब ॥२१॥

दुनियां दिल मजाजी[१], कह्या सो कछुए नाहें ।
और दिल हकीकी[२] मोमिन, हक अर्स कह्या इनों माहें ॥२२॥

इलम हक और दुनी का, कही जाए ना तफावत[३] ।
ए सुकन सुन रूह मोमिन, आवसी अर्स लज्जत ॥२३॥

बीच बका के रूहन सों, हकें करी खिलवत ।
सों साथ रूह-अल्लाह के, भेजे संदेसे इत ॥२४॥

रूह-अल्ला आए अर्स से, मुझ सों किया मिलाप ।
कहे मैं आया तुम वास्ते, मुझे भेज्या है आप ॥२५॥

ए न्यामत हक के दिल की, सोई जाने दई जिन ।
या दिल जाने मेरी रूह का, सो कहूँ आगे मोमिन ॥२६॥

ए न्यामत वाहेदत[४] की, हक के दिल की बात ।
और कोई ना ले सके, बिना बका हक जात ॥२७॥

रूह-अल्ला कहे अर्स से, तेरी रूह आई उतर ।
मैं दई बका तोहे न्यामत, अव्वल से आखिर ॥२८॥

बादल बरस्या रूह-अल्ला, ए बूंदें लई जो तिन ।
और कोई न ले सके, बिना अर्स रूहन ॥२९॥

जिन पिआ मस्ती तिन की, बीच दुनी के छिपे नाहें ।
सो मस्ती मोमिनों जाहेर हुई, चौदे तबकों माहें ॥३०॥

हकें न छोड़े अव्वल से, अपना इस्क दिल ल्याए ।
आप इस्क न छोड़ी निसबत, पर मैं गई भुलाए ॥३१॥

१. झूठ । २. सच । ३. अंतर । ४. एकता का सागर ।

जगाई तो भी ना जागी, आप कह्या इत आए ।
मैं परी बीच फरेब के, मोहे थके जगाए जगाए ॥३२॥

इस्क न आवे पेहेचान बिना, सो मोको दई पेहेचान ।
दई बातें हक के दिल की, हक की निसबत जान ॥३३॥

मैं ना कछू जानी पेहेचान, मुझ पर करी मेहेनत ।
मैं इस्क न जानी निसबत, ना तो मोहे दई हक न्यामत ॥३४॥

इस्क पेहेचान ना निसबत, सब फरेबें दिया भुलाए ।
हकें इस्क अपना, आखिर लो निबाहे ॥३५॥

ए सुख सब्दातीत के, क्यों कर आवें जुबान ।
बाले थें बुड़ापन लग, मेरे सिर पर खड़े सुभान ॥३६॥

तो भी घाव न लग्या अरवाह को, जो देखे अलेखे एहेसान ।
न्यामत पाई बका हक की, कर दई रूह पेहेचान ॥३७॥

नजर से न काढ़ी मुझे, अव्वल से आज दिन ।
क्यों कहूँ मेहेर मेहेबूब की, जो करत ऊपर मोमिन ॥३८॥

तन असल तले कदम के, और उपज्या तन सुपना ।
ताए भी हक रहे नजीक, जो था बीच फना ॥३९॥

नीदें दिए गोते सुध बिना, ए जो सुपन का तन ।
तिनको भी हकें न छोड़िया, सिर पर रहे रात दिन ॥४०॥

उमर अव्वल से आखिर लग, गुजरी सांई संग ।
मैं पेहेले ना पेहेचाने, हक के इस्क तरंग ॥४१॥

जो बात करनी है हकें, सो पेहेले लेवें माहें दिल ।
पीछे सब में पसरे, जो वाहेदत में असल ॥४२॥

एक पातसाही अर्स की, और वाहेदत का इस्क ।
सो देखलावने रूहों को, पेहेले दिल में लिया हक ॥४३॥

जो पेहेले लई हकें दिल में, पीछे आई माहें नूर ।
तिन पीछे हादी रूहन में, ए जो हुआ जहूर ॥४४॥

वास्ते नूर-जलाल के, और हादी रूहन ।
बोहोत बेवरा है खेल में, किया महंमद रूहों देखन ॥४५॥

महामत कहे ऐ मोमिनों, हक साहेबी बुजरक ।
बेसक इलम हक का, और हक का बड़ा इस्क ॥४६॥

॥प्रकरण॥६॥चौपाई॥३०५॥

बेसकी का प्रकरण

ए इलम इन वाहेदत का, हकें सो बेसकी दई मुझ ।
नूर के पार द्वार बका के, सो खोले अर्स के गुझ ॥१॥

चौदे तबकों ढूंढ़या, सब रहे दूर से दूर ।
रूह-अल्ला के इलम बिना, हुआ न कोई हजूर ॥२॥

कई दुनियां में बुजरक हुए, किन बका तरफ पाई नाहें ।
सो इलम नुकता ईसे का, बैठावे बका माहें ॥३॥

सो साहेदी देवाई महंमद की, सेहेरग[1] से नजीक हक ।
नूर के पार नूर-तजल्ला[2], इलम माहें बैठावे बेसक ॥४॥

गिन तूं सुख बेसक के, जो इलम दिया नसीहत ।
मेहेर करी मेहेबूब ने, हकें जान निसबत ॥५॥

सक ना तीन उमत में, सक ना खास उमत ।
सक ना उमत फरिस्ते, सक ना कुंन कुदरत ॥६॥

खासल खास रूहें इस्क, और खासे बंदगी दिल ।
आम वजूद जदल[3] से, जिनों नासूती अकल ॥७॥

रूहों लई हकीकत मारफत, गिरो फरिस्तों हकीकत ।
आम खलक जाहेरी, जो करम कांड सरीयत ॥८॥

१. प्राण धमनी । २. परमधाम । ३. जिद

दो गिरो पोहोंची वतन अपने, तीसरी आम जो दीन ।
सो तेता ही नजीक, जिनका जेता आकीन ।।९।।

पाई तीनों की बेसकी, कुफर बंदगी इस्क ।
ऐसा इलम इन दुनी में, हुई बका की बेसक ।।१०।।

सक ना पैदा फना की, सक ना दोजख भिस्त ।
हिसाब ठौर की सक नहीं, सक ना ठौर कयामत ।।११।।

सक ना आठों भिस्त में, सक ना काजी कजाए ।
बेसक किए आखिर लो, अव्वल से इप्तदाए ।।१२।।

क्यों कर मुरदे उठसी, क्यों होसी हक दीदार ।
क्यों कर हिसाब होएसी, ए सब रूह-अल्ला खोले द्वार ।।१३।।

केते दिन कयामत के, क्यों कयामत के निसान ।
ए सक कछुए ना रही, जो लिखी बीच कुरान ।।१४।।

सक ना दाभ-तूल-अर्ज की, सक ना सूर मगरब ।
बेसक हक कौल मोमिनों, रही ना सक कोई अब ।।१५।।

सक ना आजूज[१] माजूज[२] की, आड़ी अष्ट धात दिवाल ।
लिख्या टूटेगी आखिर, ए बेसक दुनी के काल ।।१६।।

रूह-अल्ला सब रूहन को, पाक कर देवें आकीन ।
कुफर दज्जाल को तोड़ के, बेसक करें एक दीन ।।१७।।

ल्याया ईसा वास्ते मोमिनों, बेसक बका न्यामत ।
करें हक जात पर सिजदा, इमाम मोमिनों इमामत ।।१८।।

सक ना किसी अर्स की, सक न नूर-मकान ।
सक ना बेचून बेचगून, सक ना चार आसमान ।।१९।।

कहूं बेसक तिनका बेवरा, नासूती[३] मलकूत[४] ।
ना सक आसमान जबरूत[५], ना सक आसमान लाहूत[६] ।।२०।।

१. दिन । २. रात । ३. मृत्युलोक । ४. वैकुण्ठ । ५. अक्षरधाम । ६. परमधाम ।

सक नाहीं सरीयत में, न सक रही तरीकत ।
सक नाहीं हकीकत में, सक ना हक मारफत ॥२१॥

सक ना जुदी जुदी कयामत, सक नाहीं वाहेदत ।
बेसक जुदी जुदी पैदास, ए जो कादर की कुदरत ॥२२॥

सक ना पेहेचान रसूल की, जो कही तीन सूरत ।
बसरी मलकी और हकी, जो जाहेर होसी आखिरत ॥२३॥

सक ना जबराईल में, और सक ना मेकाईल[१] ।
सक ना सूर बजाए की, सक ना असराफील ॥२४॥

सक ना अरवाहें अर्स की, जो तीन बेर उतरे ।
लैल[२] में आए जिन वास्ते, कछू सक ना रही ए ॥२५॥

सक ना आए खेल देखने, ए जो रूहें आइयां बिछड़ ।
कर मेला नासूत में बेसक, ले नसीहत आए अर्स चढ़ ॥२६॥

महंमद ईसा अर्स में, पोहोंचे हक हजूर ।
कर अर्ज सब मेयराज में, बेसक करी मजकूर ॥२७॥

महंमद ईसे किए जवाब, तिन में रही न सक ।
सक नहीं पड़उत्तर में, जो हकें दिए बुजरक ॥२८॥

बीच सब मेयराज के, जेती भई मजकूर ।
ए सक जरा ना रही, जो खिलवत तजल्ला-नूर[३] ॥२९॥

छिपी बातें बीच अर्स के, कोई रही न माहें सक ।
पाई ऐसी बेसकी, जो लई दिल की बातें हक ॥३०॥

आगूं बेसक बड़े अर्स[४] के, नूर रोसन जोए[५] किनार ।
दोऊ तरफों जरी जोए के, नूर रोसन अति झलकार ॥३१॥

सक नाहीं जल उजले, मीठा ज्यों मिश्री ।
सक ना गिरदवाए बाग की, कई मोहोल जवेर जरी ॥३२॥

१. ब्रह्मा । २. रात (माया) । ३. परमधाम । ४. धाम । ५. जमुनाजी ।

खुसबोए जिमी अति उज्जल, ज्यों सोने जवेर दरखत ।
बेसक जंगल जवेर ज्यों, रोसन नूर झलकत ॥३३॥

सक नाहीं हौज ताल की, इत बोहोत मोहोल बुजरक ।
बिरिख पानी ताल पाल के, सब पाट घाट बेसक ॥३४॥

बेसक बड़े अर्स की, क्यों कहूं बड़ी मोहोलात ।
बाग बड़ा गिरदवाए का, इन जुबां कह्या न जात ॥३५॥

इत सक मोहे जरा नहीं, बन गलियों पसु खेलत ।
गिरदवाए गून्जे अर्स के, कई विध जिकर करत ॥३६॥

यों केती कहूं बेसकी, इनका नहीं हिसाब ।
महामत देखावे हक इस्क, जो साकी पिलावे सराब ॥३७॥

॥प्रकरण॥७॥चौपाई॥३४२॥

सराब सुख लज्जत

साकी पिलावे सराब, रूहें प्याले लीजिए ।
हक इस्क का आब[1], भर भर प्याले पीजिए ॥१॥

हक आसिक रूहन का, इन इस्क का आब जे ।
इन आब में जो स्वाद है, ए रस जानें पीवन वाले ॥२॥

नहीं हिसाब इस्क का, स्वाद को नाहीं हिसाब ।
हिसाब ना तरंग अमल के, ए जो आवत साकी[2] के सराब ॥३॥

कई रस इन सराब में, ए जो पिलावत सुभान ।
मस्ती पिलावत कायम, मेहेर कर मेहेरबान ॥४॥

रूहें नींद से जगाए के, पिलावत प्याले फूल ।
मुंह पकड़ तालू रूह के, देत कायम सुख सनकूल[3] ॥५॥

ए प्याले कर मेहेरबानगी, कई रूहों पिलावत ।
सुख देने बका नजीक का, प्यार कर निसबत ॥६॥

१. जल । २. पिलानेवाला । ३. प्रसन्न ।

कई विध मेहेर करत हैं, मासूक जो मेहेरबान ।
उलट आप आसिक हुआ, जो वाहेदत में सुभान ।।७।।

रूहों के दिल कछू ना हुता, कछू कहें न मांगें हक से ।
ना कछू चित्त में चितवन, ना मुतलक रूहों मन में ।।८।।

आस बंधाई हुकमें, हुकमें कराई उमेद ।
आप इस्क की बुजरकी, कर मेहेर देखाए कई भेद ।।९।।

यों कई सुख दिए इस्क के, कई सुख दिए जो मेहेर ।
कई सुख अपनी बड़ाई के, जासों और लगे सब जेहेर ॥१०॥

कई सुख दिए अर्स के, कई सुख दिए निसबत ।
कई सुख दिए इलम के, बेसक जो नसीहत ॥११॥

कई सुख दिए रूहन में, ए मेला बैठा विध जिन ।
हक ऊपर आप बैठके, सुख देवें सबन ॥१२॥

सुख दिए अर्स जिमीय के, सुख दिए जल जोए[1] ।
सुख दिए मोहोलात के, सब जरी किनारे सोए ॥१३॥

सुख दिए जल ताल के, सुख ताल कई विवेक ।
कोट जुबां ना केहे सके, तो कहा कहे रसना एक ॥१४॥

सुख दिए मोहोल नूर के, सुख बाग नूर गिरदवाए ।
ए समूह मोहोल सुख कैसे कहूं, इन जुबां कहे न जाए ॥१५॥

कई सुख बड़े अर्स के, बन गिरद मोहोलात ।
ए कायम सुख हक अर्स के, सुख हमेसा दिन रात ॥१६॥

कई सुख जोए बाग के, कई सुख कुंज गलियन ।
कई सुख पसु पंखियन के, मुख बानी मीठी बोलन ॥१७॥

ए खेलौने सुख हक के, ए सुख दिए रूहन ।
खूबी इनके परन की, आकास न माए रोसन ॥१८॥

१. जमुनाजी ।

देखी कायम साहेबी हक की, जिनका नहीं सुमार ।
इन नासूत में बैठाए के, सुख देखाए नूर के पार ॥१९॥

कई सुख दिए लैलत कदर में, जो अव्वल दो तकरार ।
सुख दिए फजर तीसरे, कई सुख परवरदिगार[1] ॥२०॥

कई सुख दिए निसबत कर, ए झूठा तन कर यार ।
क्यों कहूं सुख मेहेबूब के, जाके कायम सुख अपार ॥२१॥

और सुख सब मेयराज में, केते कहूं जुबान ।
जुदी जुदी जंजीरों, लिखे मांहें फुरमान ॥२२॥

हकें कह्या उतरते, तुम जात बीच नासूत ।
आप वतन जिन भूलो मोहे, मैं बैठा बीच लाहूत ॥२३॥

तब फेर कह्या अरवाहों ने, हम क्यों भूलें तुमको ।
तुम पेहेले किए चेतन, खेल कहा करे हमको ॥२४॥

ए बातें बीच अर्स के, अव्वल जो मजकूर ।
सो याद देने लिखी रमूजें[2], जो हुई हक हजूर ॥२५॥

बैठाए बीच नासूत के, हम पर भेज्या फुरमान ।
उनमें लिखी इसारतें, वाहेदत के सुभान ॥२६॥

मोमिन मेरे अहेल[3] हैं, हकें लिख्या माहें कुरान ।
खोल इसारतें रमूजें, इनों जरे जरा पेहेचान ॥२७॥

और जिन छुओ कुरान को, यों हकें लिखी हकीकत ।
वाको नापाकी ना टरे, बिना तौहीद[4] मदत ॥२८॥

सो मदत तौहीद की, पाइए ना मोमिनों बिन ।
ए दुनियाँ को चाहें नहीं, जाको हक बका रोसन ॥२९॥

सो पाक मोमिन कहे, जिन लिया हकीकी दीन ।
सो हक बिना कछू ना रखें, ऐसा इनका आकीन ॥३०॥

१. धाम धनी । २. गुझ बातें । ३. वारसदार । ४. अद्वैतवाद ।

हकीकत मारफत के, इनको खुले द्वार ।
उतरे नूर बिलंद से, याको वतन नूर के पार ॥३१॥

जहां जबराईल जाए ना सक्या, रह्या नूर-मकान ।
पर जलावे नूरतजल्ली, चढ़ सक्या न चौथे आसमान ॥३२॥

जित हक हादी रूहें, अर्स अजीम का नूर ।
कौल किया रूहोंसों हकें, सो महमंद मसी ल्याए मजकूर ॥३३॥

और हुज्जत[1] न रखी किनकी, चौदे तबक की जहान ।
मोमिनों ऊपर अहमद, ल्याया एह फुरमान ॥३४॥

ए नाबूद वजूद जो नासूती, अर्स उमत धरे आकार ।
लिख्या हकें कुरान में, ए तन मेरे यार ॥३५॥

यों हकें लिख्या कुरान में, ए अरवाहें मेरे अहेल ।
ए झूठे वजूद जो खाक के, निपट गंदे सेहेल ॥३६॥

औलिया लिल्ला दोस्त कर, नूर जमाल लिखत ।
ऐसे निजस[2] तन नासूती, कहे यासों मेरी निसबत ॥३७॥

कहे नूर-जमाल कुरान में, छोड़ के एह अंधेर ।
एक साद[3] करो मुझको, मैं तुमें जी जी कहूं दस बेर ॥३८॥

यों हकें लिख्या कुरान में, हक रूहों की करें जिकर ।
पीछे आपन करत हैं, रूहें क्यों न देखो दिल धर ॥३९॥

हकें लिख्या कुरान में, पेहेले मेरा प्यार ।
जो तुम पीछे दोस्ती करो, तो भी मेरे सच्चे यार ॥४०॥

रूहें सुनो एक मैं कहूं, जो हकें करी मुझसों ।
पड़ी थी जल अंधेर में, कोई थाह न थी इनमों ॥४१॥

भवसागर जीवन को, किन पाया नाहीं पार ।
दुख रूपी अति मोहजल, माहें धखत जीव संसार ॥४२॥

१. सम्बन्ध (दावा) । २. दूषित । ३. रिझाना (प्रेम से नाम-आवाज देना)।

लेहेरी उठे अंधेर की, पहाड़ जैसी बेर बेर ।
ऊपर तले लग भमरियां, जीव पड़े फेर माहें फेर ॥४३॥

निपट अंधेरी ला-ए[1] की, सिर ना सूझे हाथ पाए ।
टापू पहाड़ो बीच में, सब बंधे गोते खाए ॥४४॥

मगर मच्छ माहें बुजरक, वजूद बड़े विक्राल ।
खेलें निगलें जीव को, एक दूजे का काल ॥४५॥

ला मकान का सागर, लग तले तेहेतसरा[2] ।
ऐसे अंधेर अथाह बीच पैठ के, मोहे काढ़ी होए मरजिया[3] ॥४६॥

काढ़ के बूझ ऐसी दई, मोहे समझाई सब इत का ।
बेसक का इलम दिया, जासों बैठी बीच बका ॥४७॥

ए सब किया हक ने, वास्ते इस्क के ।
एक जरे जरा जो दुनीय में, जो विचार देखो तुम ए ॥४८॥

मैं कह्या नूरी अपना रसूल, तुम पर भेज्या फुरमान ।
लिखी गुझ बातें दिल की, हाए हाए केहेवत यों सुभान ॥४९॥

लिखी अन्दर की इसारतें, और रमूजें जे ।
कुन्जी भेजी हाथ रूहअल्ला, जाए दीजो अपनी अरवाहों को ए ॥५०॥

सो कुन्जी दई मुझ को, और खोलने की कल ।
तिनसे ताले सब खुले, पाई आखिर अव्वल असल ॥५१॥

और कोई ना खोल सके, तीन सूरत का हाल ।
फैल हाल दोऊ उमत के, तोको लिखिया नूरजमाल ॥५२॥

सुख देओ दोऊ उमत को, बीच बैठ नासूत ।
चिन्हाए इस्क हक साहेबी, बुलाए ल्याओ लाहूत ॥५३॥

इन विध सुख केते कहूँ, झूठी इन जुबान ।
मेरी रूह जाने या मोमिन, या दिए जिन रेहेमान[4] ॥५४॥

१. अस्तित्व होना । २. पाताल । ३. गोताखोर । ४. कृपालु ।

दे आड़ो ब्रह्मांड सबन को, ढूंढ़ ढूंढ़ रहे सब दूर ।
आगूं आए इलम दिया, जासो पोहोंची बका हजूर ॥५५॥
केती कहूं मेहेर मेहेबूब की, जो रूहें देखो सहूर कर ।
महामत कहे मेहेर अलेखे, जो देखो रूह की नजर ॥५६॥

॥प्रकरण॥८॥चौपाई॥३९८॥

निसबत का प्रकरण

देख तूं निसबत अपनी, मेरी रूह तूं आंखां खोल ।
तैं तेरे कानों सुनें, हक बका के बोल ॥१॥
कौन जिमी में तूं खड़ी, कहां है तेरा वतन ।
कौन खसम तेरी रूह का, कौन असल तेरा तन ॥२॥
कौन मिलावा तेरा असल, तूं बिछुरी क्यों कर ।
तो तोहे याद न आवहीं, जो तैं सुन्या नहीं दिल धर ॥३॥
सहूर तोको साहेब दिया, इलम दिया हक ।
बाहेर माहें अन्तर, एक जरा न रही सक ॥४॥
चौदे तबकों में नहीं, रूह-अल्ला का इलम ।
ए दिया एक तोही को, करके मेहेर खसम ॥५॥
मूल मिलावा चीन्ह्या, चीन्ह्या बिछुरे वास्ते जिन ।
बेसक हुई इन बातों, जो हक बका का बातन[1] ॥६॥
दुनियां में अर्स कहावहीं, ताए सब जानें हक ।
ए इलम तिनको नहीं, जो तैं पाया बेसक ॥७॥
त्रैगुन सिफत कर कर गए, ए जो खावंद जिमी आसमान ।
खोज खोज खाली गए, माहें थके ला मकान ॥८॥
मलकूत साहेब फरिस्ते, हक ढूंढ़्या चहूं ओर ।
रहे बेचून[2] बेसबीय[3] में, ना पाया बका ठौर ॥९॥

१. गुह्य भेद । २. निराकार । ३. निरंजन ।

ए नूर बका किने ना पाइया, कर कर गए सिफत ।
ए सुध नूर बका को नहीं, जो तैं पाई न्यामत ॥१०॥

नूर बका इत दायम[१], आवे हक के दीदार ।
तले झरोखे झांकत, आए उलंघ जोए[२] के पार ॥११॥

नूर-जमाल[३] के दीदार को, आवें नूर-जलाल[४] ।
नूर-जमाल के अर्स में, इत रूहें रहें कमाल ॥१२॥

इत मिलावा रूहन का, जो कही बारे हजार ।
उतरे लैलत-कदर में, एह तीसरा तकरार ॥१३॥

अर्स-अजीम तेरा वतन, खसम नूर-जमाल ।
ए इलम पाया तैं बेसक, देख कौल फैल हाल ॥१४॥

देख मेहेर तूं हक की, खोल दई हकीकत ।
देख इलम तूं बेसक, दई अपनी मारफत[५] ॥१५॥

जिन कारन तेरा आवना, हुआ जिमी इन ।
रूह-अल्ला ने जो कही, सो मैं कहूं आगे मोमिन ॥१६॥

दायम करत रब्द, रूहें हादी हक ।
सब कोई केहेते आपना, बड़ा है मेरा इस्क ॥१७॥

बीच अर्स खिलवत में, होत दायम विवाद ।
इस्क अपना रूहें हक को, फेर फेर देती याद ॥१८॥

तब कह्या हकें हादी रूहन को, मैं तुमारा आसिक ।
ए तेहेकीक तुम जानियो, इस्क मेरा बुजरक ॥१९॥

तब हादी रूहन को, ए दिल उपजी सक ।
हक का इस्क हमसे बड़ा, ए क्यों होवे मुतलक ॥२०॥

हकें कह्या रब्द मैं ना करूं, कर देखाऊं तुमको ।
इस्क मेरा तब देखो, नेक न्यारे हो मुझ सों ॥२१॥

१. हमेसा । २. जमुना । ३. श्री राजजी । ४. अक्षर ब्रह्म । ५. पहचान (श्री राज से सम्बन्ध की)

न्यारे तो हम होएँ नहीं, निमख ना छोड़ें कदम ।
ए जेती अरवाहें अर्स की, कदम तले सब हम ॥२२॥

जुदे होए हम ना सकें, अव्वल तो तुमसों ।
हादी रूहन में जुदागी, कोई होए ना सके हममों ॥२३॥

खेल देखाऊं मैं जुदागी, कदम तले बैठो मिल ।
ऐसा खेल फरामोस का, जानों जुदे हुए सब दिल ॥२४॥

हक कहे मेरी साहेबी, और मेरा इस्क ।
हादी रूहों को अर्स में, ए सुध नहीं मुतलक ॥२५॥

जो ए खबर होती तुमको, जैसी मेरी साहेबी बुजरक ।
तो बड़ा कबूं न केहेतियां, अपने मुख इस्क ॥२६॥

अर्स न छूटे खिन एक, तो क्यों देखें मेरा इस्क ।
तो क्यों पाइए इस्क बेवरा, आप अपने माफक ॥२७॥

अर्स साहेबी जानी नहीं, तो ना देख्या हक इस्क ।
तो रूहों हक सों कह्या, इस्क अपना बुजरक ॥२८॥

ना कछू जानी साहेबी, ना जान्या इस्क असल ।
तो बुजरक इस्क अपना, रब्द किया सबों मिल ॥२९॥

दायम बातें इस्क की, करत माहों-माहें प्यार ।
खेलते हँसते रमते, करत बारंबार ॥३०॥

एक इस्क दूजी साहेबी, रूहों देखलावना जरूर ।
तो हमेसा अर्स में, होता एह मजकूर ॥३१॥

ए बात हकें करनी, सुध देने सबन ।
इस्क और पातसाही की, खबर न थी रूहन ॥३२॥

बहुत बातें हैं हक की, बीच अर्स खिलवत ।
इन जुबां केती कहूं, हिसाब बिना न्यामत ॥३३॥

एक साहेबी हक की, और इस्क हक का ।
ए दोऊ कोई न चीन्हैं, बीच अर्स बका ॥३४॥

एक जरा कोई वाहेदत का, ना सके जुदा होए ।
तोलों न चीन्हे कोई हक की, इस्क साहेबी दोए ॥३५॥

अर्स से जुदे होए के, ए देखे जो कोए ।
इस्क साहेबी हक की, बुजरक देखे सोए ॥३६॥

ए देखाओ अपनी साहेबी, और कैसा इस्क है तुम ।
राजी करो देखाए के, हम बैठें पकड़ कदम ॥३७॥

जोलों जुदे होए नहीं, हक बका अर्स सों ।
तोलो नजरों न आवहीं, अर्स सुख खिलवत मों ॥३८॥

ए अनहोनी क्यों होवहीं, झूठ न आवे बका माहें ।
और रूहें बका की झूठ को, सो कबूं देखें नाहें ॥३९॥

जरा एक अर्स-अजीम का, उड़ावें चौदे तबक ।
तो रूह बका क्यों देखहीं, झूठा खेल मुतलक ॥४०॥

अनहोनी ए हकें करी, करके ऐसी फिकर ।
परदे में झूठ देखाइया, बीच कायम बका नजर ॥४१॥

मेहेर पूरी मेहेबूब की, बड़ी रूह रूहों ऊपर ।
इस्क साहेबी अर्स की, खेल देखाया और नजर ॥४२॥

हकें नेक करी महंमद सों, सब-मेयराज[1] में मजकूर ।
सो वास्ते रूहों के साहेदी, सो रूहअल्ला करी जहूर ॥४३॥

महामत कहे मेहेर मोमिनों, हकें करी वास्ते तुम ।
कौन देवे इत सुख बका[2], बिना इन खसम ॥४४॥

॥प्रकरण॥९॥चौपाई॥४४२॥

१. साक्षात्कार की रात्रि । २. अखंड ।

कलस पंच रोसनी का

रे रूह करे ना कछू अपनी, के तूं उरझी उमत माहें ।
उमर गई गुन सिफत में, तोहे अजूं इस्क आया नाहें ।।१।।

हक सिर पर इन विध खड़े, देखत ना हक तरफ ।
जो स्वाद लगे मेहेबूब का, तो मुख ना निकसे एक हरफ ।।२।।

बात करत तूं हक की, जो रूहों सों गुफ्तगोए[1] ।
इन बका की खिलवत से, कछू तोको भी नसीहत होए ।।३।।

ए सब्द कहे तैं नींद में, के सुपने करत स्वाल ।
के जवाब तेरे जागते, कछू देखे ना अपना हाल ।।४।।

कैसी बात करत है, किन ठौर की बात ।
तूं कौन गुफ्तगोए किन की, ना विचारत हक जात ।।५।।

ए बात ना होए कबूं नींद में, और सुपने भी ना एह ।
जो तूं बात करे जागते, तो तेरी क्यों रहे झूठी देह ।।६।।

ए बात ना नींद सुपन की, जो तूं बात करे जाग्रत ।
तो कौल फैल ना हाल कोई, रहे ना देह गत मत ।।७।।

जो ए बात करे जागते, तो तोहे नींद आवे क्यों फेर ।
नैनों पल क्यों लेवहीं, क्यों बोले और बेर ।।८।।

के तूं बुध रहित है, के तूं बोलत बेसहूर ।
बेसहूर क्यों कहे सके, ए हक का गुझ जहूर ।।९।।

अब तेहेकीक एही होत है, तोहे बोलावत हुकम ।
हुकमें वजूद रेहेत है, और हुकमें दिया इलम ।।१०।।

आए इलम हक बका के, तब देह रहे क्यों कर ।
बेसक हुए हक अर्स सों, सो दम रहे न हक बिगर ।।११।।

१. बात चीत ।

अर्स हक की बेसकी, पाई जरे जरे जेती ।
ज्यों जाग के केहे हकीकत, और देह बोलत सुपने की ॥१२॥

बड़ा होत है अचरज, बात जाग्रत माहें सुपना ।
जब कछू होवे जाग्रत, तब तो ए आगे ही से फना ॥१३॥

जो विचार विचार विचारिए, तो अनहोनी हक करत ।
इत बल किसी का नहीं, दिल आवे सो देखावत ॥१४॥

अर्स की रूहों को सुपना, देखो कैसे ए आया ।
ए भी हकें जान्या त्यों किया, अपने दिल का चाह्या ॥१५॥

देह रखी सुपन की, और सक ना जागे में ।
ए भी हकें जान्या त्यों किया, विचार देखो दिल में ॥१६॥

आप अर्स देखाइया, ज्यों देखिए नींद उड़ाए ।
जरा सक दिल ना रही, यों अर्स दिया बताए ॥१७॥

फेर देखो सुपन को, तो अजूं रह्या है लाग ।
फरामोसी नींद ना गई, जानों किन ने देख्या जाग ॥१८॥

जो देखूं अर्स जागते, तो इत नाहीं जरा सक ।
फेर देखूं तरफ सुपन की, तो यों ही खड़ा मुतलक ॥१९॥

ए बातें नूरजमाल की, इनमें कैसा तअजुब[1] ।
जनम लाख देखावें पल में, जानों ढ़ांप के खोली अब ॥२०॥

एक खस-खस के दाने मिने, देखाए चौदे तबक ।
तो कौन बात का अचरज, ऐसे देखावें हक ॥२१॥

ऐसी बातें हक की, इत कोई सक ल्याओ जिन ।
देख दिन में ल्यावें रात को, और रात में ल्यावे दिन ॥२२॥

ऐसे खेल कई हक के, बैठे देखावें अर्स माहें ।
रूह बकाएँ लई देह नासूती, जो मुतलक[2] कछुए नाहें ॥२३॥

१. आश्चर्य । २. बेसक ।

तन ऐसा धर नासूत में, करी हक सों निसबत ।
कजा चौदे तबक की, इन तन पे करावत ॥२४॥

ऐसी अचरज बातें हक की, क्यों कहूं झूठी जुबान ।
कहूं इन तन का खसम, जो वाहेदत में सुभान ॥२५॥

दोस्त कहूं हक बका को, धर ऐसा झूठा तन ।
निसबत तुमसों तो कहूं, जो देख्या बका वतन ॥२६॥

एह विध मैं केती कहूं, कौन अचरज इन ।
कई बातें ऐसी हक की, जो विचार देखो रूह तन ॥२७॥

अब केहेती हों खसम को, तुम से कैसी चतुराए ।
ए भी जानो त्यों करो, ऐसी बनी खेल में आए ॥२८॥

जेती बातें मैं कही, तिन सब में चतुराए ।
ए चतुराई भी तुम दई, ना तो एक हरफ न काढ़्यो जाए ॥२९॥

एह बात रही हुकम पर, करें हक सांची सोए ।
या राजी या दलगीर[1], ए हाथ खसम के दोए ॥३०॥

उमर तो सब चल गई, आया उठने का दिन ।
या तो उठाओ हँसते, ज्यों जानो त्यों करो रूहन ॥३१॥

नींद आई हुकम सों, हुकमें हुआ सुपन ।
हुकम से जागत हैं, एक जरा न हुकम बिन ॥३२॥

हकें इलम ऐसा दिया, जो चौदे तबकों नाहें ।
और नाहीं नूर मकान में, सो दिया मोहे सुपने माहें ॥३३॥

ए इलम नूर जमाल बिना, दूजा कौन बकसत ।
मुझ बिना किने ना पाइया, मेरी बेसक रूह जानत ॥३४॥

या जानें एह मोमिन, जिन इलम पाया बेसक ।
तिनों नीके कर चीन्ह्या, जिन बूझ लिया इस्क ॥३५॥

१. दुखी, उदास ।

मोमिन तिन को जानियो, नूर-जमाल सों निसबत ।
मेरी बेसक देसी साहेदी, जिनों पाई हक न्यामत ॥३६॥

अब इन ऊपर क्या बोलना, आगूं मेहेबूब तुम ।
जिन विध जानो त्यों करो, दोऊ तन तले कदम ॥३७॥

जो हक के दिल में आइया, सो सब देख्या नीके कर ।
जो देखाया इलमें, या देखाया नजर ॥३८॥

और जो हक के दिल में, बाकी होसी अब ।
जो तुम देखाओगे, सो रूहें देखें हम सब ॥३९॥

केहेना केहेलावना ना रह्या, ऐसा तुम दिया इलम ।
तुम बिना जरा है नहीं, ज्यों जानो त्यों करो खसम ॥४०॥

बोलिए सो सब बन्धन, ए भी बोलावत तुम ।
ए सहूर भी तुम देत हो, ज्यों जानो त्यों करो खसम ॥४१॥

खसम खसम तो केहेती हों, जानों खुदी रहे ना मुझ माहें ।
गुनाह अपनी अंगना पर, बका में आवत नाहें ॥४२॥

ए भी इलम हकें दिया, मैं कहा कहूं खसम ।
ठौर ना कोई बोलन की, बैठी हों तले कदम ॥४३॥

खसम खसम तो केहेती हों, जो तुम देखाई निसबत ।
भार[1] भी तुम देओगे, तुम ही देओगे लज्जत ॥४४॥

दोऊ तन तले कदम के, आतम परआतम ।
इनमें सक कछू ना रही, यों कहे हक इलम ॥४५॥

सिखाओ चलाओ बोलाओ, सो सब हाथ हुकम ।
सो इलमें बेसक करी, और कहा कहूं खसम ॥४६॥

अन्तर माहें बाहेर की, सब जानत हो तुम ।
ए इलमें बेसक करी, अब कहा कहूं खसम ॥४७॥

१. वजन (भार) सहना अर्थात् संबंध का मान रखना ।

साथ आए मेला मिलसी, सो सब हाथ हुकम ।
ए सक इलमें ना रखी, अब कहा कहूं खसम ॥४८॥

खेल कर उतारे खेल में, रूहें पोहोंची इन इलम ।
इन बातों सक ना रही, कहा कहूं तुमें खसम ॥४९॥

हुकमें पूरी सब उमेद, और बाकी हाथ हुकम ।
ए इलमें बेसक करी, अब कहा कहूं खसम ॥५०॥

दिन गए सो तुम जानत, बाकी भी जानत तुम ।
जिन विध राखो त्यों रहूं, कहा कहूं खसम ॥५१॥

ठौर और कोई ना रही, सो बेसक करी इलम ।
ए बेवरा तुम कहावत, सो केहेती हों खसम ॥५२॥

चौदे तबक सिर मलकूत, ए तो कुरसी[1] फरिस्तों अर्स ।
इन सिर ला-मकान है, आगूं सब्द न चले निकस ॥५३॥

फना तले ला मकान लग, आगूं नूर-मकान बका ।
उतथें उतरे सो चढ़े, और चढ़ ना सके इत का ॥५४॥

देख्या बेचून बेचगून को, और बेसबी बेनिमून ।
निराकार देख्या ला निरंजन, ए बेसक पड़ी सब सुंन ॥५५॥

अव्वल इलमें देखाइया, आखिर बेसक इलम ।
चौदे तबक देखे नूर लग, ठौर नहीं बिना तेरे तले कदम ॥५६॥

और नजीक न कोई फरिस्ता, कोई नाहीं इन्सान और ।
हादी रूहें तेरे कदम तले, कोई और न पोहोंचे इन ठौर ॥५७॥

गिरो नजीकी फरिस्ते, इनका नूर-मकान ।
ए मलकूत में रेहे ना सकें, चढ़ ना सकें लाहूत आसमान ॥५८॥

नूर-मकान का खावंद, जिनके होत एक पल ।
कोट ब्रह्मांड ऐसे होए के, वाही खिन में जात हैं चल ॥५९॥

१. देवलोक, बैकुंठ की गादी ।

इन नूर-मकान का खावंद, जाको नामै नूर-जलाल ।
आवत दायम दीदार को, जित अर्स नूर-जमाल ॥६०॥

दई साख रसूल अल्लाह ने, ना पोहोंचे जबराईल इत ।
कहे पर जले तजल्ली[1] से, ताथें जोए[2] ना उलंघत ॥६१॥

इन अर्स नूरजमाल के, हादी रूहें इन दरगाह[3] माहें ।
रूहें इन कदम तले, और ठौर ना कोई क्याहें ॥६२॥

नूर-जलाल दीदार बाहेर से, करके पीछे फिरत ।
नूर-जमाल के कदमों, बड़ीरूह[4] रूहें बसत ॥६३॥

ए ना खबर नूरजलाल को, सुख नूरजमाल कदम ।
इन बातों सब बेसक करी, मोहे रूह-अल्ला इलम ॥६४॥

हादी रूहों को खेल देखाइया, देख्या बैठे तले कदम ।
और न कोई केहे सके, बिना निसबत खसम ॥६५॥

मोहे इन इलमें बेसक करी, सक न जरा इलम ।
दई बेसकी सबन को, ठौर नहीं बिना तेरे कदम ॥६६॥

रूहें बारे हजार नूर बड़ी रूह के, बड़ी रूह नूर खसम ।
ए ठौर बेसक देखिया, बिना नहीं तले तेरे कदम ॥६७॥

फेर फेर दई ए बेसकी, याही वास्ते भेज्या इलम ।
जाने जिन भूलें रूहें खेल में, याद देने हक कदम ॥६८॥

ए हादी रूहें इन कदम तले, जिनको कहे मोमिन ।
फुरमान इसारतें रमूजें, आई कुन्जी ऊपर इन ॥६९॥

कुंजी हाथ रूहअल्ला, और रसूल हाथ फुरमान ।
भेजे इमाम पे खेल में, सो हादी रूहों लिए निसान ॥७०॥

नासूत में बैठाए के, भेज्या बेसक इलम ।
एक जरे जेती सक ना रही, बैठी बेसक तले कदम ॥७१॥

१. रोसनी, नूर । २. जमुनाजी । ३. दरबार, परमधाम । ४. स्यामाजी ।

ए सक हमको तो मिटी, जो हम बैठे तले कदम ।
फरामोसी हम को मिटावने, भेज्या तुम अपना इलम ॥७२॥

आया फुरमान खेल देखावने, और आया हक इलम ।
ए खेल नीके तब देखिया, जब देख्या बैठे तले कदम ॥७३॥

तुम मोहे ऐसा देखाइया, एक वाहेदत[१] में हैं हम ।
दूजा कछुए है नहीं, बिना तुम तले कदम ॥७४॥

ए भी इलम तुम दिया, जासों तुम हुए मुकरर[२] ।
दिल सों रूहों विचारिया, कछू है ना वाहेदत बिगर ॥७५॥

ए तेहेकीक[३] तुम कर दिया, तुम बिना कछुए नाहें ।
ए भी तुम कहावत, इत मैं न आवत मुझ माहें ॥७६॥

ए जिन बिध हक बोलावत, तिन बिध रूह बोलत ।
हम बैठे तले कदम के, ए हम पे हक कहावत ॥७७॥

अनजानत[४] को इलमें, बेसक दिए देखाए ।
कदमों नूरजमाल के, हम सब रूहें लई बैठाए ॥७८॥

तुम बैठाए बैठत हों, मुझ में नहीं ताकत ।
बैठी कदम तले हक, ए भी तुम कहावत ॥७९॥

महामत कहे मेहेबूब जी, कोई रह्या न और उदम ।
बेसक और काहूं नहीं, बिना तेरे तले कदम ॥८०॥

॥प्रकरण॥१०॥चौपाई॥५२२॥

हक रूहन की खिलवत

खिलवत हक रूहन की, जो इस्क रूहों असल ।
ए बातून बका अर्स की, बीच न आवे फना अकल ॥१॥

रूहें बड़ी रूह सों मिलके, बहस किया हकसों ।
हम तुमारे आसिक, इस्क है हम मों ॥२॥

१. एक दिली (अद्वैत भाव)। २. स्थिर होना । ३. निश्चित । ४. ना समझ ।

बड़ी रूह कहे तुम सांची सबे, पर इस्क मेरा काम ।
अव्वल हक और रूहन सों, इन इस्कै में मेरा आराम ।।३।।

फेर जवाब रूहन को, इन विध दिया हक ।
इस्क तुमारा भले है, पर मैं तुमारा आसिक ।।४।।

हक आसिक बड़ी रूह का, और रूहों का आसिक ।
ए क्यों कहिए सीधा इस्क, बन्दों का आसिक हक ।।५।।

रूहें चाहिए आसिक हक के, और आसिक बड़ी रूह के ।
और बड़ी रूह भी आसिक हक की, सीधा इस्क बेवरा ए ।।६।।

तुम सब रूहें मेरे तन हो, तुम सों इस्क जो मेरे दिल ।
ए क्यों कर पाओ बका मिने, जो सहूर करो सब मिल ।।७।।

तब हक के दिल में उपज्या, मैं देखाऊं अपना इस्क ।
और देखांऊं साहेबी, रूहें जानत नहीं मुतलक ।।८।।

तब हक के अंग का नूर जो, जो है नूरजलाल ।
तब तिनके दिल पैदा हुआ, देखों इस्क नूरजमाल ।।९।।

कैसा इस्क बड़ी रूह सों, कैसा इस्क साथ रूहन ।
बड़ी रूह का इस्क हक सों, इस्क हक सों कैसा है सबन ।।१०।।

एह रब्द हमेसा रहे, बड़ी रूह रूहें और हक ।
अब घट बढ़ क्यों कर जानिए, वाहेदत पूरा इस्क ।।११।।

असल जुदागी अर्स में, सो तो कबूं न होए ।
वाहेदत इस्क घट बढ़, क्यों कर होवे दोए ।।१२।।

वाहेदत कहिए इनको, तन मन एक इस्क ।
जुदागी जरा नहीं, वाहेदत का बेसक ।।१३।।

तो बेवरा कबूं न पाइए, बीच अर्स वाहेदत ।
इस्क बेवरा तो पाइए, जो कछू होए जुदागी इत ।।१४।।

जो इस्क वाहेदत का, ए जो किया मजकूर ।
ए बेवरा क्यों पाइए, कोई होए न पल एक दूर ॥१५॥
अर्स बका में जुदागी, सुपने कबूं न होए ।
तो हक इस्क का बेवरा, क्यों पावे मोमिन कोए ॥१६॥
हकें कह्या रूहन को, मैं देखाऊँ इस्क ।
ए बेवरा इस्क का, तुम पाओगे बेसक ॥१७॥
मैं छिपाऊं तुमको, बैठो कदम पकड़ के ।
ए तुम इस्कै से पाओगे, आए मिलो मुझसे ॥१८॥
ए इस्क तो पाइए, जो पेहेले मोको जाओ भूल ।
तुम ले बैठो जुदागी, मैं भेजों तुम पर रसूल ॥१९॥
मैं भेजों किताबत तुमको, सब इत की हकीकत ।
तुम कहोगे किन खसमें, भेजी किताबत ॥२०॥
सो कहां है हमारा खसम, कैसा खेल कौन हम ।
रसूल देसी तुमें साहेदियां, पर मानोगे न तुम ॥२१॥
कहां है हमारा वतन, कौन जिमी ए ठौर ।
क्यों कर हम आए इत, बिना मलकूत है कोई और ॥२२॥
पढ़ोगे सब साहेदियां, जो मैं लिखोंगा इसारत ।
सो दिल में ल्याओगे, पर छूटेगी नहीं गफलत ॥२३॥
मैं लिखोंगा रमूजें, और सिखाऊंगा मेरा इलम ।
तिन इलम से चीन्होगे, पर छूटे न झूठी रसम ॥२४॥
तुम जाए झूठे खेल में, कर बैठोगे जुदे जुदे घर ।
मैं आए इलम देऊं अर्स का, पर तुम जागो नहीं क्योंए कर ॥२५॥
मैं रूह अपनी भेजोंगा, भेख लेसी तुम माफक ।
देसी अर्स की निसानियां, पर तुम चीन्ह न सको हक ॥२६॥

हादी मीठे सुकन हक के, कहेगा तुमें रोए रोए ।
तुम भी सुन सुन रोएसी, पर होस में न आवे कोए ॥२७॥

खेल देखोगे दुख का, याद देसी मैं ए सुख ।
मैं देऊंगा सब साहेदियां, पर तुम छोड़ न सको दुख ॥२८॥

मैं तुमारे वास्ते, करोंगा कई उपाए ।
ए बातें सब याद देऊँगा, जो करता हों इप्तदाए[१] ॥२९॥

क्यों ऐसी हम से होएगी, क्या हम जुदे होसी माहें खेल ।
ऐसी अकल क्यों होएसी, ए कैसी है कदर-लैल[२] ॥३०॥

दूर तो करोगे नहीं, कदम तले बैठे हक ।
हम फेरें तुमारा फुरमाया, ऐसे लूखे[३] होसी मुतलक ॥३१॥

तुम बिना हम कबहूं, रेहे ना सकें एक दम ।
क्यों होसीं हम नादान[४], जो ऐसा करें जुलम ॥३२॥

जैसा साहेब केहेत हो, ऐसी कबूं हमसे न होए ।
सौ बेर देखो अजमाए के, ऐसी मोमिन करे न कोए ॥३३॥

आप भूलें या हक कदम, या भूलें अर्स घर ।
ऐसी निपट नादानी, हम करें क्यों कर ॥३४॥

रूहों ऐसी आई दिल में, कोई खेल है खूबतर[५] ।
खेल देख हक वतन, आप जासी बिसर ॥३५॥

ए जेती हुई रद-बदलें[६], त्यों त्यों खेल दिल चाहे ।
फेर फेर मांगे खेल को, कोई ऐसी बनी जो आए ॥३६॥

ना तो जो बात आखिर होएसी, सो रबें आगूं दई बताए ।
कह्या खेल जुदागी दुख का, तुम मांगत हो चित ल्याए ॥३७॥

हक आप सांचे होने को, सब विध कही सुभान ।
त्यों त्यों दिल ज्यादा चाहे, वास्ते करने ऊपर एहेसान ॥३८॥

१. प्रारंभ से । २. मोह की रात । ३. एहसान - फरामोस (सुने दिल वाले) । ४. ना समझ । ५. बढ़िया । ६. वाद विवाद ।

मिनों मिने करें हुसियारियां, हक खेल देखावें जुदागी ।
एक कहे दूजी को मुख थें, रहिए लपटाए अंग लागी ॥३९॥

क्यों हम जुदे होएसी, एक दूजी को छोड़ें नाहें ।
क्यों भूलें हम हक को, बैठे खिलवत के माहें ॥४०॥

हक कहे तुम भूलोगे, आप बैठे बका में जित ।
मुझे भी तुम भूलोगे, ऐसा खेल देखोगे बैठे इत ॥४१॥

ऐसी क्यों होवे हमसे, ऐसे क्यों होवें बेसुध हम ।
खेल फरेब लाख देखिए, पर क्यों भूलिए इन खसम ॥४२॥

एक दूजी कहे रूहन को, तुम हूजो खबरदार ।
खेल देखावें फरामोस का, जिन भूलो परवरदिगार ॥४३॥

जो तूं भूले मैं तुझको, देऊंगी तुरत जगाए ।
मैं भूलों तो तूं मुझे, पल में दीजे बताए ॥४४॥

इन विध एक दूजी सों, मसलहत[1] करी सबन ।
क्या करसी खेल फरेब का, आपन मोमिन सब एक तन ॥४५॥

सो क्यों भूलें ए सैयां, जो आगूं होवें खबरदार ।
खेल देखावें चेतन कर, सो भूलें नहीं निरधार ॥४६॥

सो भूलेंगे क्यों कर, इस्क जिनको होए ।
एक पाव पल जुदागीय का, क्यों कर सेहेवें सोए ॥४७॥

इस्क सबों रूहों पूरन, वाहेदत का मुतलक ।
क्यों जरा पैठे जुदागी, बीच रूहों हादी हक ॥४८॥

ए बोहोत रब्द बीच अर्स के, रूहों हक सों हुआ मजकूर ।
अर्स बका के हजूरी, ए क्यों होवें हक सों दूर ॥४९॥

इस्क का अर्स अजीम में, रब्द हुआ बिलंद[2] ।
तो फरामोसी[3] में इस्क का, बेवरा देखाया खावंद ॥५०॥

१. सलाह । २. महान । ३. बेहोसी ।

आप बैठे दिल देय के, ऊपर बारे हजार ।
फरामोसी हांसी होएसी, जिनको नहीं सुमार ॥५१॥

हक बैठे खेल देखावने, जिन फरामोसी हाँसी होए ।
इस्क हक का आवे दिल में, ए फरामोसी हांसी जाने सोए ॥५२॥

तिन वास्ते हकें पैदा किया, दई दूर जुदागी जोर ।
और नजीक बैठाए सेहेरग से, यों देखाया खेल मरोर ॥५३॥

अर्स बका बीच ब्रह्मांड में, चौदे तबकों में सुध नाहें ।
किया सेहेरग से नजीक, गिरो बैठी बका माहें ॥५४॥

दिया बीच ब्रह्मांड जुदागी, अजूं इनसे भी दूर दूर ।
निपट दई ऐसी नजीकी, बैठे अंग सों लाग हजूर ॥५५॥

ऐसा बुजरक खेल देखाया, ऐसा न देख्या कब ।
ए बातें हाँसी फरामोसी की, करसी इस्क ले अब ॥५६॥

फरामोसी दई जिन वास्ते, हाँसी भी वास्ते इन ।
इस्क ले ले हँससी, कयामत बखत मोमिन ॥५७॥

ए बातें हुई सब अर्स में, रूहें बड़ी रूह हक साथ ।
सो ए खेल पैदा हुआ, काहूं हाथ न सूझे हाथ ॥५८॥

कई जातें कई जिनसें, कई फिरके मजहब ।
भेख भाखा सब जुदियां, हक को ढूंढ़ें सब ॥५९॥

ढूंढ़ ढूंढ़ सब जुदे परे, हक न पाया किन ।
अव्वल बीच और आखिर लो, किन पाया न बका वतन ॥६०॥

रसमें सबों जुदी लई, माहों-माहें कई लरत ।
आप बड़े सब कहावहीं, पानी पत्थर आग पूजत ॥६१॥

ए ऐसा खेल अंधेर का, सब कहें हम बुजरक ।
पर हक सुध काहू में नहीं, छूटी न सुभे सक ॥६२॥

काहूं तरफ न पाई अर्स की, कहावत हैं दीनदार[1] ।
डूबे सब अपनी स्यानपे, जात हाथ पटक सिर मार ॥६३॥

ऐसे में आए रसूल, हाथ लिए फुरमान ।
फैलाया नूर आलम में, वास्ते मोमिनों पेहेचान ॥६४॥

आगूं आए खबर दई, आखिर आवेगा साहेब ।
रूहअल्ला इमाम उमत, होसी नाजी-मजहब[2] ॥६५॥

पुकार करी सबन में, कह्या आवेगा सुभान ।
हिसाब ले भिस्त देयसी, ठौर हक बका पेहेचान ॥६६॥

ऐसा खेल पैदा हुआ, और सोई आए मोमिन ।
सोई खेल देखे पीछे, भूल गए आप वतन ॥६७॥

और भूले खसम को, गए खेल में रल ।
कोई सुध बका की न देवहीं, जो कायम अर्स असल ॥६८॥

बैठे ख्वाब जिमीय में, और दिल पर सैतान पातसाह ।
नसल[3] आदम हवाई[4], जो मारे खुदाई राह ॥६९॥

मोमिन आए इन नसल में, जित हक न सुन्या कान ।
तिन जिमी क्यों पावें मोमिन, कायम अर्स सुभान ॥७०॥

मोमिन आए जुदे जुदे, जुदी जातें जुदी रवेस ।
जुदे मुलक मजहब जुदे, जुदी बोली जुदे भेस ॥७१॥

चौदे तबक की दुनी को, काहू खबर खुदा की नाहें ।
ऐसे किए मोहोरे खेल के, ए भी मिल गए तिन माहें ॥७२॥

दुनियां चौदे तबक में, काहू खोली नहीं किताब ।
साहेब जमाने का खोलसी, एही सिर खिताब ॥७३॥

कुंजी ल्याए रूहअल्ला, दई हाथ इमाम ।
सो गिरो मोमिनों मिलाए के, करसी सिजदा[5] तमाम[6] ॥७४॥

१. धर्म के ठेकेदार । २. निजानंद संप्रदाय, मुक्ति देने वाला । ३. वंशज । ४. माया का (जीव) । ५. दण्डवत प्रणाम । ६. समस्त सृष्टि ।

सो अग्यारै सदी मिने, होसी जाहेर हकीकत ।
हादी मोमिन जानसी, हक की इसारत ॥७५॥

अव्वल करी बातें अर्स में, वास्ते मोमिनों न्यामत ।
कुन्जी खिताब सबे ल्याए, सोई फुरमान ल्याए इत ॥७६॥

सो मिली जमात रूहन की, जिन वास्ते किया खेल ।
सो हक भी आए इन बीच में, सो कहे वचन माहें लैल ॥७७॥

लैल[1] गई पुकारते, आया बखत फजर ।
ए अग्यारै सदी पूरन, तब खुली रूहों नजर ॥७८॥

ए बुजरकी इस्क की, अबलों न जानी किन ।
और मोहोरे सब खेल के, क्यों जाने बिना मोमिन ॥७९॥

सो फरामोसी मोमिन को, हकें दई बनाए ।
और हक जगावें ऊपर से, बिना इस्क न उठ्यो जाए ॥८०॥

आप हकें दिल उठाए के, खेल किया फरामोस ।
एती पुकारें हक की, आवत नाहीं होस ॥८१॥

ए बातें बोहोत बारीक हैं, और हैं बुजरक ।
ए सुध तब तुमें होएसी, जब आवसी इस्क ॥८२॥

महामत रूहों हक सों हुआ, बहस इस्क वास्ते ।
सो इस्क बिना क्यों पैठिए, बीच हक अर्स के ॥८३॥

॥प्रकरण॥११॥चौपाई॥६०५॥

सूरत हक इस्क के मगज[2] का बेसक

हाए हाए क्यों न सुनो रूहें अर्स की, हक बका वतन ।
रूहअल्ला ने जाहेर किया, काहू सुन्या न एते दिन ॥१॥

फरामोसी हकें दई, सो वास्ते हाँसी के ।
हाए हाए घाव न लागहीं, सुन के सब्द ए ॥२॥

१. रात (अज्ञानता) । २. रहस्य ।

ए साहेब हाँसी करे, अर्स की अरवाहों सों ।
हाए हाए विचार न आवहीं, ऐसी सखती हिरदे मों ।।३।।

ए साहेब किने न देखिया, ना किन सुनिया कान ।
ढूंढ गए त्रैगुन, पर पाया न काहूं निदान ।।४।।

एक पल थें पैदा फना, कोट ब्रह्मांड नूर के ।
सो नूर[१] नूरजमाल[२] के, मुजरे आवत इत ए ।।५।।

जो किनहूं पाया नहीं, सो जात रोज दरबार ।
साहेब अर्स-अजीम के, करने उत दीदार ।।६।।

सो साहेब हाँसी करे, अपने मोमिन रूहो सों मिल ।
सो सुन के घाव न लागहीं, हाए हाए ऐसे बजर[३] दिल ।।७।।

हाँसी करी किन भांत की, फरामोसी दई किन ।
पर हाए हाए दिल न विचारहीं, कोई ऐसा दिल हुआ कठिन ।।८।।

हक का इस्क हम पें, पूरा पाया मैं ।
ए खेल देखाया नींद का, फरामोसी के से ।।९।।

इलम भी पूरा दिया, जित जरा न मैं को सक ।
सुख देखे बेसक अर्स के, तो क्यों न आवे हक इस्क ।।१०।।

सुख में भी सक नहीं, नाहीं अर्स में सक ।
ना कछू सक इलम में, सक ना खसम हक ।।११।।

सक ना रही कछू खेल में, सक ना आए देखन ।
सक ना मैं हक की, और सक ना गिरो मोमिन ।।१२।।

सक नाहीं कुदरत में, सक नाहीं कादर[४] ।
सक नहीं कयामत में, सब अरवाहें उठें ज्यों कर ।।१३।।

सक ना कायम भिस्त में, बेसक ब्रह्मांड हुकम ।
बेसक तीनों उमत, बेसक घरों पोहोंचावें हम ।।१४।।

१. अक्षरब्रह्म । २. पूर्णब्रह्म । ३. कठोर । ४. सामर्थवान ।

बेसक फरामोसीय में, हक बेसक मिले हम साथ ।
बेसक ताला खोलिया, बेसक कुन्जी हमारे हाथ ॥१५॥

बेसक खेल देखाइया, खोली बेसक कतेब वेद ।
बेसक हमों ने पाइया, बेसक हक दिल भेद ॥१६॥

बेसक दोऊ अर्सों की, जरे जरे की बेसक ।
बेसक मेहेर मोमिनों पर, बेसक करी जो हक ॥१७॥

जो पैदा चौदे तबक में, जो कोई हुए बुजरक[1] ।
अपने मुख किने ना कह्या, जो हम हुए बेसक ॥१८॥

सो बेसक मैं जानिया, ए बात तेहेकीक[2] बेसक ।
मोमिन बेसक समझियो, बेसक बोले मैं हक ॥१९॥

केतेक मोमिन हो बेसक, जो बेसक करो विचार ।
तो बेसक सुख अर्स का, इन तन बेसक ल्यो करार ॥२०॥

दुनियां चौदे तबक में, कोई बेसक हुआ न कित ।
सो सब थें सक मिट गई, ऐसी बेसकी आई इत ॥२१॥

किस वास्ते हाँसी करी, किस वास्ते हुए फरामोस ।
हाए हाए दिल ना विचारहीं, हाए हाए आवत नाहीं माहें होस ॥२२॥

ए कदम दिल कछू आवहीं, जब करे विचार दिल ए ।
हाए हाए ए समया क्यों ना रह्या, इन हाँसी फरामोसी के ॥२३॥

हाए हाए दिल में न आवहीं, किस वास्ते हाँसी भई ।
ए कारन कौन फरामोस को, ए दिल खोल किने न कही ॥२४॥

समया न रह्या किन वास्ते, होए पेहेचान न वास्ते किन ।
इस्क हक के दिल का, हाए हाए पाए नहीं लछन ॥२५॥

आप फरामोसी देय के, ऊपर से जगावत ।
तरंग हक इस्क के, हाए हाए दिल में न आवत ॥२६॥

१. महान । २. निश्चित ।

खेल किया किस वास्ते, किस वास्ते देखाया दुख ।
मेहेर प्रीत हक के दिल की, हाए हाए देखें ना इस्क के सुख ॥२७॥

किस वास्ते हलके[1] जगावत, ऊपर करत बोहोतक सोर ।
हाए हाए ए सुध कोई ना ले सके, हक के इस्क का जोर ॥२८॥

किस वास्ते दुनी ना समझी, किस वास्ते भेज्या फुरमान ।
ए बातें हक के इस्क की, हाए हाए करी न काहूं पेहेचान ॥२९॥

कुंजी ल्याए किस वास्ते, किस वास्ते दई दूजे को ।
मेहेर अल्ला के कलाम, हाए हाए आए ना काहूं दिल मों ॥३०॥

किस वास्ते खिताब खुदाए का, एक सोई खोले कलाम ।
हाए हाए ए सुध मोमिनो ना लई, मीठा हक इस्क का आराम ॥३१॥

ए द्वार किने ना खोलिया, ए जो कुरान किताब ।
पाई ना हकीकत किनहूं, हाए हाए एकै ठौर खिताब ॥३२॥

साहेदी देवे जो खुदाए की, सोई खुदा जान ।
सो साहेदी किन ना लई, हाए हाए मगज न पाया कुरान ॥३३॥

लिखी इसारतें[2] रमूजें[3], हकें किन ऊपर ।
ए बातें मोमिनों मिनें, हाए हाए छिपी रही क्यों कर ॥३४॥

तरंग हक के इस्क के, पाए ना गिरो में किन ।
अजूं माएने मगज, हाए हाए पाए नहीं मोमिन ॥३५॥

हक के दिल का इस्क, निपट बड़ी है बात ।
अजूं जाहेर रूहों ना हुई, अर्स सूरत हक जात ॥३६॥

हाँसी करी किन वास्ते, फरामोसी की दे ।
हाए हाए मोमिन ना समझे, बात इस्क की ए ॥३७॥

लिख्या ऐसा कुरान में, कुँआरी रही फुरकान[4] ।
ए दाग[5] गिरो तब देखसी, हाए हाए होसी जब पेहेचान ॥३८॥

१. आहिस्ते । २. संकेत । ३. भेद । ४. कुरान । ५. अल्पज्ञान - कम जानकारी का दाग ।

ए भी वास्ते इस्क के, फुरमाया यों कर ।
तो कही कुँआरी फुरकान, हाए हाए गिरो न लई दिल धर ॥३९॥

उतरे नूर बिलंद से, मोमिन बड़ा मरातब[1] ।
हक के दिल का इस्क, हाए हाए मोमिन लेसी कब ॥४०॥

ऐसा नूर-जमाल जो, रूहें रहें इन दरगाह ।
ए किस्सा सुनते विचारते, हाए हाए उड़त नहीं अरवाह ॥४१॥

हक सूरत के दिल का, मोमिनों से सनेह ।
हेत प्रीत इस्क की, हाए हाए आई नहीं काहूं एह ॥४२॥

इस्क खेल हाँसी इस्क, इस्क फरामोस मोमिन ।
इस्कें रसूल होए आइया, वास्ते इस्क न पाया किन ॥४३॥

इस्कें फुरमान आइया, वास्ते इस्क न खुल्या किन ।
वास्ते इस्क के गैब[2] हुआ, इस्कें खुले ना खुदा बिन ॥४४॥

इस्कें कुंजी ल्याइया, इस्कें ल्याया खिताब ।
इस्कें आए मोमिन, इस्कें खुले ना सिताब ॥४५॥

कई बानी इस्कें उपजी, कई इस्कें पड़ी पुकार ।
ए रूहें भी वास्ते इस्क के, हाए हाए हुइयां न खबरदार ॥४६॥

हाए हाए इस्क हक का, समझे नहीं मोमिन ।
ना तो अरवाहें थी अर्स की, पर हुआ न दिल रोसन ॥४७॥

सो भी वास्ते इस्क के, जो लगत नाहीं घाए ।
सो भी वास्ते इस्क के, जो उड़त नहीं अरवाहे ॥४८॥

इस्कें ऊपर पुकारहीं, आवत नाहीं होस ।
सो भी वास्ते इस्क के, जो टलत नहीं फरामोस ॥४९॥

सो भी वास्ते इस्क के, जो लगत न कलाम[3] सुभान ।
सो भी वास्ते इस्क के, जो होत नहीं पेहेचान ॥५०॥

१. पदवी, दर्जा । २. छिपी । ३. वचन ।

सो भी वास्ते इस्क के, जो पेहेचान आवत नाहें ।
सो भी वास्ते इस्क के, जो पेहेचानत दिल माहें ॥५१॥

ए करत है सब इस्क, जो खेल में कोई जीतत ।
सो भी करत इस्क, जो कोई काहूं भूलत ॥५२॥

ए बारीक बातें इस्क की, ए कोई समझत नाहें ।
सो भी करत है इस्क, जानत बल जुबांए ॥५३॥

सो भी करत है इस्क, जुदी जुदी जिनस ।
काहू सुध थोड़ी काहू घनी, काहू इस्क न देत हरगिस[१] ॥५४॥

इस्क सेती हारिए, जितावे इस्क ।
इस्कें इस्क न आवहीं, इस्क करे बेसक ॥५५॥

ए बारीक बातें हक की, क्यों कर जानी जाए ।
इस्क हक के दिल का, बिना हुकमें क्यों समझाए ॥५६॥

ए हक देखावें इस्क, तो बेर न पल एक होए ।
सौ साल सोहोबत कीजिए, बिना हुकम न समझे कोए ॥५७॥

ए बातें हक के दिल की, निपट बारीक हैं सोए ।
बिना इस्क दिए हक के, क्यों कर समझे कोए ॥५८॥

इस्क हक के दिल का, क्यों आवे माहें बूझ[२] ।
हक देवें तो इस्क आवहीं, ए हक के इस्क का गुझ[३] ॥५९॥

ए हक का बातून इस्क, तिन इस्क का बारीक बातन ।
बिना पाए इस्क हक के, इस्क न आवे किन ॥६०॥

ए खेल फरामोसीय का, इस्कें किया जो अब ।
तुम कायम[४] दायम[५] इस्क में, पर ऐसा इस्क न कब ॥६१॥

ए हमेसा रूहन में, रहे भीगे बीच इस्क ।
पर इस्क ए फरामोसीय का, जो हक के दिल माफक ॥६२॥

१. जरामात्र । २. समझ । ३. गुप्त । ४. अखंड । ५. नित प्रति ।

बीच कायम ठौर बिछोहा नहीं, जो जुदी होवे गिरो दम ।
खेल इस्क जुदागीय का, क्यों देखें अर्स में हम ॥६३॥

लेने लज्जत इस्क वास्ते, दई फरामोसी खेल हुकम ।
जो रूह लेवे बीच दिल के, तो देखे इस्क खसम ॥६४॥

आप आगूं रूहें बैठाए के, दिल से उपजाई हक ।
सुख देने देखाइया, अपने दिल का इस्क ॥६५॥

आप दे फरामोसी, और जगावें भी आप ।
देखाई जुदाई फरामोस में, देने इस्क मिलाप ॥६६॥

न मांग्या न दिल उपज्या, दिल हकें उठाया एह ।
तो मांग्या खेल जुदागीय का, देने अपना इस्क सनेह ॥६७॥

इस्क तरंग उपजत है, दूर जाए मिलिए आए ।
वास्ते इस्क हक के दिल का, खेल फरामोसी देखाए ॥६८॥

इस्क बिछुरे से जानिए, आए दूर थें मिलिए जब ।
ए दोऊ बातें अर्स में ना थीं, इस्क चिन्हार देखाई अब ॥६९॥

जो हक का इस्क विचारिए, तो बड़ा दिल देत लज्जत ।
ए बुजरक मेहेरबानगी, हकें ऐसी दई न्यामत ॥७०॥

जैसा साहेब बुजरक, तैसा बुजरक इस्क ।
जो दिल देय के देखिए, तो सुख आवे हक माफक ॥७१॥

जैसा मेहेबूब बुजरक, तैसा हादी हक का तन ।
रूहें तन हादी माफक, इनों माफक बका वतन ॥७२॥

ऐसा साहेब इस्क, करत निसबत जान ।
हाए हाए भूली अरवाहें असल, परत नहीं पेहेचान ॥७३॥

भूले हक और आप को, और भूले बका घर ।
हक हँससी इसी बात को, रूहें भूली क्यों कर ॥७४॥

औलिया लिल्ला दोस्त, हकसों रखें निसबत ।
फरामोसी दई हाँसीय को, कछू चल्या न हकसों इत ॥७५॥

कैसे थे इन खेल में, किन माफक थे तुम ।
किन से ए निसबत[१] भई, कैसा बका पाया खसम ॥७६॥

कहां थे फना[२] के खेल में, कैसा था अर्स घर दूर ।
किन बुजरकों न पाइया, सो क्यों कर लिए तुमें हजूर ॥७७॥

कैसा अर्स देखाइया, क्यों लिए खिलवत माहें ।
ए जो अरवाहें अर्स की, क्यों अजूं विचारत नाहें ॥७८॥

किन सूरत न पाई हक की, न पाया अर्स बका ठौर ।
सब कहें हमों न पाइया, कर कर थके दौर ॥७९॥

धनी मलकूत के कई गए, पर पाया न नूर-मकान ।
खोज खोज के कई थके, पर देख्या नहीं निदान ॥८०॥

ऐसा साहेब बुजरक, जो हमेसा कायम ।
सो तले झांकत नूरजमाल के, आवे दीदारें दायम ॥८१॥

कैसा हाल है तुमारा, हो कैसे वतन में तुम ।
कौन बड़ाई तुमारी, हाए हाए आवे न याद खसम ॥८२॥

कैसा घर बुजरक बका, कैसी खसम साहेबी ।
किन चाह्या तुमारा दीदार, कैसी तिनकी है बुजरकी ॥८३॥

कैसी जिमी थी कुफर की, और कैसी थी अकल ।
किन झूठे कबीले में थे, कैसे तुमारे अमल ॥८४॥

अब कैसा सहूर है तुम पे, पाई कौन सोहोबत ।
किन कबीले में थे, अब कैसी राखत हो निसबत ॥८५॥

कैसी पाई सराफी[३], कैसी आई तुमें पेहेचान ।
हक बका चीन्हया कौन जिमिएं, पाया कैसा इस्क ईमान ॥८६॥

१. सबंध । २. नाशवान । ३. परख, जांच ।

जागत हो के नींद में, विचारत हो के फरामोस[1] ।
सीधी बात जाग करत हो, तुम हो होस में के बेहोस ॥८७॥

विचार नींद में तो ना होए, जागे नींद रहे क्यों कर ।
विचार देखो तो अचरज, देखो फरामोसी हाँसी दिल धर ॥८८॥

आड़ा ब्रह्मांड देय के, ऐसी जुदागी कर ।
करत गुफ्तगोए[2] हजूर, खेल ऐसा किया जोरावर ॥८९॥

ना तो बैठे हो कदम तले, पर लागत ऐसे दूर ।
हक आप इस्क देखावने, करत आपनसों मजकूर[3] ॥९०॥

हक का इस्क बढ़या, इस्क अपना जरा नाहें ।
जब दई इत बेसकी, तो इस्क क्यों न आवे दिल माहें ॥९१॥

तुम कहोगे हम बेसुध हुए, दिल में रही ना खबर ।
ना कछू रही सो अकल, तो इस्क आवे क्यों कर ॥९२॥

ना सुध आप ना खसम, ना सुध घर गुफ्तगोए ।
ज्यों जीवत मुरदे भए, रूहें क्यों कर बल होए ॥९३॥

आप भूले बेसक, बेसक भूले खसम ।
बेसक भूले बुध वतन, पर हकें बेसक दिया इलम ॥९४॥

मुए भी इत बेसक, और जिए भी बेसक ।
सहूर भी बेसक दिया, दिया इलम बेसक हक ॥९५॥

तब सुध पाई सब बेसक, हुए बेसक खबरदार ।
हकें ऐसी दई बेसकी, हुए बेसक बेसुमार ॥९६॥

इनहीं बात की हाँसी है, उड़त ना फरामोस ।
ना तो जब बेसक हुए, हाए हाए क्यों न आवत होस ॥९७॥

ऐही हाँसी इसही बात की, फरामोसी में जाग्रत ।
जागे में भी सक नहीं, कोई ऐसी इस्कें करी जो इत ॥९८॥

१. बेहोसी । २. वार्तालाप । ३. चर्चा ।

बैठाए बेसक अर्स में, और जगाए बेसक ।
हाँसी भी बेसक हुई, जो आया नहीं इस्क ॥९९॥

कहे महामत तुम पर मोमिनों, दम दम जो बरतत ।
सो सब इस्क हक का, पल पल मेहेर करत ॥१००॥

॥प्रकरण॥१२॥चौपाई॥७०५॥

बुलाए ल्याओ तुम रूहअल्ला

ल्याओ बुलाए तुम रूहअल्ला, जो रूहें मेरी आसिक ।
रब्द किया प्यार वास्ते, कहियो केहेलाया हक ॥१॥

रूहअल्ला सों बका मिने, हकें करी मजकूर ।
उतरी अरवाहें अर्स से, बुलाए ल्याओ हजूर ॥२॥

हक बका का बातून, जो किया रूहों सों गुझ ।
केहेलाइयां बातें छिपियां, खिलवत करके मुझ ॥३॥

मैं वास्ता[1] कहूं तुमको, उतरियां कारन इन ।
इनों रब्द किया इस्क का, आगूं मेरे बीच वतन ॥४॥

करी रूहों मसलहत[2] मिलके, कहे हमको प्यारे हक ।
और बड़ी रूह प्यारी हमको, ए बात जानो मुतलक[3] ॥५॥

बड़ी रूह कहे प्यारे मुझे, मेरा साहेब बुजरक ।
और प्यारी रूहें मेरे तन हैं, ए जानो तुम बेसक ॥६॥

तुम रूहें नूर मेरे तन का, इन विध केहेवे हक ।
बोहोत प्यारी बड़ी रूह मुझे, मैं तुमारा आसिक ॥७॥

प्यार हक का ज्यादा हमसों, ए उपजी रूहों दिल सक ।
इस्क हमारा हक सों, क्या नहीं हक माफक ॥८॥

और भी ए रूहों कह्या, हक प्यारे हैं हमको ।
और प्यारी बड़ी रूह, जरा सक नहीं इनमों ॥९॥

१. कारण, सम्बन्ध, लगाव, मेरे लिए । २. सलाह । ३. बेसक ।

तब ए बात सुन हकें कह्या, मैं प्यारा हों तुमको ।
पर मैं आसिक अरवाहों का, सो कोई जानत नहीं तुममों ॥१०॥

तुम ज्यादा प्यार कह्या अपना, हादी कहे मेरा अधिक ।
मैं कह्या प्यार मेरा ज्यादा, तब तुमें उपजी सक ॥११॥

तुम रूहें मेरे नूर तन, सो वाहेदत के बीच एक ।
इस्क बेवरा बका मिने, क्यों पाइए ए विवेक ॥१२॥

तुम बड़ा इस्क कह्या अपना, मेरा न आया नजर ।
खेल देखाया तिन वास्ते, अब देखो सहूर कर ॥१३॥

ए बेवरा बीच बका मिने, इस्क का न होए ।
दई जुदागी तिन वास्ते, बात करी बका में सोए ॥१४॥

छिपाइयां अपनी मेहेर में, देखाया और आलम ।
देखो कौन आवे दौड़ अर्स में, लेय के इस्क खसम ॥१५॥

रूहों ऐसा खेल देखाऊं मैं, जित झूठे झूठ पूजत ।
ढूंढें अव्वल आखिर लग, तो हक न कहूं पाइयत ॥१६॥

आए फंसे तिन फरेब में, पानी पत्थर आग पुजात ।
अर्स साहेब कायम की, कहूं सुपने न पाइए बात ॥१७॥

आइयां तिन आलम में, जित हक को न जानत कोए ।
पूजें खाहिस हवाए को, जो कोई इनमें बुजरक होए ॥१८॥

झूठे मोहोरे जो खेल के, मिल गैयां माहें तिन ।
कबीला कर बैठियां, कहे एह हमारा वतन ॥१९॥

समझाईयां समझें नहीं, मानें नहीं फुरमान ।
कहें कौन तुम कौन हम, अपने कैसी पेहेचान ॥२०॥

ए सोई हमारा साहेब, जो बड़को[1] दिया बताए ।
ए पत्थर पानी आग है, पर हमसों छोड़्या न जाए ॥२१॥

१. पूर्वज ।

बड़के[१] हमारे कदीम के, पूजत आए ए ।
सो क्यों छूटे हमसे, रब बाप दादों का जे ॥२२॥

रब रसूल बतावे गैब का, हम पूजें जाहेर ।
हम बातून को पोहोंचे नहीं, देखें नजर बाहेर ॥२३॥

केतिक करें लड़ाइयां, सामी देवें फरेब[२] ।
कौन रसूल कौन रूहअल्ला, कौन वेद कौन कतेब ॥२४॥

इन हाल जो दुनियां, ए गईयां तिन में मिल ।
मोहे इस्क बिना पावें नहीं, रूहों ऐसी भई मुस्किल ॥२५॥

कठिन हाल है रूहों का, पर तुम विरचो[३] जिन ।
भूल गईयां उनें सुध नहीं, हाँसी एही मोमिन ॥२६॥

बड़ी हाँसी इत होएसी, जब सब होसी रोसन ।
खेल खुसाली इत होएसी, इस्क बेवरे इन ॥२७॥

एक रोसी एक हँससी, होसी खूबी बड़ी खुसाल ।
बिना इस्क बीच अर्स के, कोई देखे न नूरजमाल[४] ॥२८॥

रोसी इनहीं हाल में, वास्ते हाँसी के ।
मुदा[५] सब हाँसीय का, फरामोसी का जे ॥२९॥

रूहअल्ला एता कहियो, तुम मांग्या सो फरामोस ।
जब इस्क ज्यादा आवसी, तब आवसी माहें होस ॥३०॥

मैं छिपा हों इनसे, रूहें नजर में ले ।
वह देखत झूठा आलम, मोको देखत नाहीं ए ॥३१॥

जब इस्क इनों आवसी, तब देखेंगे मुझको ।
इस्क बिना इन अर्स में, मैं मिलों नहीं इनसों ॥३२॥

रब्द रूहों ने हकसों, किया इस्क का जोए ।
तो अर्स में इस्क बिना, पैठ न सके कोए ॥३३॥

१. पूर्वज । २. धोखा । ३. उदासीन होना । ४. श्री राजजी । ५. तात्पर्य ।

इनों रब्द किया इस्क का, हम जैसा हक का नाहें ।
दई फरामोसी इन वास्ते, देखों कैसा इस्क इनों माहें ॥३४॥

ऐसी देखाई दुनियां, जित कोई हक को जानत नाहें ।
काहूँ तरफ न पाइए अर्स की, बैठे बका बैत[1] के माहें ॥३५॥

पार ना अर्स जिमीय का, बैठियां कदम तले इत ।
ऐसा पट आड़ा किया, जानूं कहूं गईयां हैं कित ॥३६॥

जब याद तुमें मैं आंऊगा, तबहीं बैठोगे जाग ।
गए आए कहूं नहीं, सब रूहें बैठीं अंग लाग ॥३७॥

मैं लाड़ किया रूहन सों, वास्ते इस्क इन ।
क्यों ना लें मेरा इस्क, अंग असलू मेरे तन ॥३८॥

बोहोत लाड़ किए मुझसों, इनों अर्स में मिल ।
एक लाड़ किया मैं इनों से, प्यार देखन सब दिल ॥३९॥

मैं फुरमान भेज्या है अव्वल, हाथ अमीन[2] रसूल ।
इमाम भेज्या रूहों वास्ते, जिन जावें ए भूल ॥४०॥

याद दीजो अरवाहों को, जो मैं करी खिलवत ।
सो ए लिखी फुरमान में, रमूजें इसारत ॥४१॥

अव्वल बातें जो अर्स की, जाए कहियो तुम ।
फुरमान पेहेले भेजिया, लिखी हकीकत हम ॥४२॥

बातें बका में जो हुई, जब उनों होसी रोसन ।
तब तुरत ईमान ल्यावसी, जो मेरे हैं मोमिन ॥४३॥

इलम मेरा उनों में, जाए करो जाहेर ।
मैं सेहेरग से नजीक, नहीं बका थें बाहेर ॥४४॥

तुम बैठे मेरे कदम तले, कहूं गईयां नाहीं दूर ।
ए याद करो इन इस्क को, जो आपन करी मजकूर ॥४५॥

१. घर । २. सत्यनिष्ठ ।

इत जो करी मजकूर, अजूं सोई है साइत ।
चार घड़ी दिन पीछला, तुम जानो हुई मुद्दत ॥४६॥

जों रब्द किया इत बैठ के, अजूं बैठे हो ठौर इन ।
रात दिन ना पल घड़ी, सोई बात सोई खिन ॥४७॥

याही अजमाइस[१] वास्ते, खेल देखाया ए ।
जब इलम मेरे बेसक हुई, तब दौड़सी इस्क ले ॥४८॥

नाम मेरा सुनते, और सुनत अपना वतन ।
सुनत मिलावा रूहों का, याद आवे असल तन ॥४९॥

सक मिटी जिनों हक की, और मिटी हादी की सक ।
बेसक हुइयां आप वतन, ताए क्यों न आवे इस्क ॥५०॥

सांच झूठ में मिल गईयां, तुरत होसी तफावत ।
करसी पल में बेसक, ऐसा इलम मेरी न्यामत ॥५१॥

अजमावने अरवाहों को, हकें दिया वास्ते इन ।
अव्वल फरामोसी देय के, इलमें खोले दीदे[२] बातन[३] ॥५२॥

बातून खुले ऐसा हुआ, सेहेरग से नजीक हक ।
तुम बैठे बीच अर्स के, कदम तले बेसक ॥५३॥

चौदे तबकों न पाइए, हक बका ठौर तरफ ।
सो कदम तले बैठावत, ऐसा इलम का सरफ[४] ॥५४॥

इलम हक के बेसकी, बेसक आवे सहूर ।
बेसक पेहेचान हक की, बरस्या बेसक बका नूर ॥५५॥

बेसक असल सुख की, आवे बेसक रूहों इलम ।
जरे जरे की बेसकी, जो बीच नजर खसम ॥५६॥

बेसक देखी फरामोसी, बेसक गिरो मोमिन ।
बेसक फुरमान रमूजें[५], पाई बेसक बका वतन ॥५७॥

१. परिक्षा । २. नजर । ३. अंदरुनी । ४. श्रेष्ठता, कमाल । ५. भेद ।

बेसक ठौर कादर, पाई बेसक कुदरत ।
बेसक खेल जो मांगया, बेसक बातें उमत ॥५८॥

बेसक हकें देखाइया, बेसक करी मजकूर ।
बेसक रद-बदल करी, हुआ बेसक इलम जहूर ॥५९॥

बेसक जगाई फरामोस में, बेसक दे इलम ।
होसी रूहों बका की बेसक, ले बेसक इलम खसम ॥६०॥

भुलाइयां खेल में बेसक, हुआ बेसक बेवरा ए ।
क्यों ना लें इस्क बेसक, कहाए बेसक संदेसे ॥६१॥

रूहों को हकें बेसक, भेज्या पैगाम बेसक ।
इस्क बेसक ले आइयो, भेजी बेसक रूह बुजरक ॥६२॥

इस्क रूहों कम बेसक, हादी ज्यादा इस्क बेसक ।
सब थें इस्क बढ़्या, बेसक इस्क जो हक ॥६३॥

महामत कहे बेसक मोमिनों, बेसक बेवरा कमाल ।
फरामोसी में हक का, पाइए बेसक इस्क हाल ॥६४॥

॥प्रकरण॥१३॥चौपाई॥७६९॥

सूरत अर्स अजीम की बातूनी[1] रोसनी

रूहअल्ला सुभाने भेजिया, रूहें अर्स अपनी जान ।
पिउ प्यारे भेजी रूह अपनी, तुम क्यों ना करो पेहेचान ॥१॥

अरवाहें जो अर्स की, सो उरझियां माहें फरेब ।
सो सुरझाइयां पट खोल के, केहे हकीकत वेद कतेब ॥२॥

मजकूर बका बीच में, किया हक हादी रूहन ।
दई फरामोसी हाँसीय को, बीच अपने अर्स मोमिन ॥३॥

ऐसी तुमें देखाऊं दुनियां, और पनाह[2] में राखों छिपाए ।
ओ तुमें ना चीन्ह हीं, ना तुमें ओ चिन्हाए ॥४॥

१. आन्तरिक । २. शरण ।

मैं छिपोंगा तुमसों, तुमें नजर में ले ।
पाओ ना अर्स या मुझे, काहूं तरफ न पाओ ए ।।५।।
ढूंढ़ोगे तुम मुझको, बोहोतक सहूर कर ।
मेरा ठौर न पाओ या मुझे, क्योंए ना खुले नजर ।।६।।
आंखां होसी खुलियां, मेरी बातां करो माहों-माहें ।
ढूंढ़ोगे माहें बाहेर, और पावे ना कोई क्याहें ।।७।।
क्या कहूं भेजोगे हमको, के इतथें करोगे दूर ।
के इतहीं बैठे देखाओगे, हमको अपने हजूर ।।८।।
इतहीं बैठे देखोगे, खेल हांसी का फरामोस ।
सहूर करोगे बोहोतक, पर आए न सको माहें होस ।।९।।
ज्यों जाने बेसुध हुए, जैसे अमल[1] चढ़्या जोर ।
सो तुम क्यों ए ना सुनोगे, हादी करे बोहोतक सोर ।।१०।।
ना तुमें अमल ना नींद कछू, पर ऐसा खेल हाँसी का ए ।
खेलें हँसें बातें करें, याद आवे ना हक घर जे ।।११।।
ऐसा इलम हादीय पे, देखावे हक वतन ।
आप पाओ पल में जगावहीं, इन इलम आधे सुकन ।।१२।।
जो हुए होवें मुरदे, तिनको देत उठाए ।
इन विध इलम लदुन्नी[2], पर तुमें न सके जगाए ।।१३।।
ऐसी देखोगे दुनियां, हक न काहूं खबर ।
ना सुध अर्स न आपकी, कई ढूंढ़त सहूर कर ।।१४।।
ना सुध मेरी ना वतन की, आपुस में जाओगे भूल ।
ना सुध मेरे कागद[3] की, ना सुध मेरे रसूल ।।१५।।
लिखी इसारतें रमूजें[4], निसान हकीकत ।
सुध कछू तुमें न परे, भूलोगे मेरी न्यामत ।।१६।।

१. नशा । २. तारतमज्ञान । ३. कुरान । ४. रहस्य ।

ऐसा फुरमान भेजसी, और याद देसी रसूल ।
जिन अंग इस्क तिनका, क्यों होसी ऐसा सूल ॥१७॥

भूलोगे तेहेकीक तुम, मेरी पाओ ना तुम खबर ।
ए खेल देखे ऐसा होएसी, ना सुध आप ना घर ॥१८॥

एक दूजी आपुस में, रहे ना रूह चिन्हार ।
ना चीन्हो बड़ी रूह को, ना कछू परवरदिगार ॥१९॥

रूहें कहें हाँसी होसी अति बड़ी, तुम हूजो सबे हुसियार ।
क्यों ए न भूलें आपन, जो खेल जोर करे अपार ॥२०॥

आपन सामी हाँसी करें हकसों, चले ना खेल को बल ।
आपन आगूं चेतन हुइयाँ, रहिए एक दूजी हिल मिल ॥२१॥

जब आगूं से खबर करी, क्या करे फरेब असत ।
इस्क हमारा कहां जाएसी, क्या करसी नहीं मदत ॥२२॥

इस्क का बल भान के, क्या फरेब होसी जोर ।
निसबत अपनी हकसों, क्यों देसी मरोर ॥२३॥

दूर तो कहूं जाए नहीं, बैठे पकड़ हक चरन ।
तो फरामोसी बल क्या करे, आपन आगूं हुइयां चेतन ॥२४॥

कहें रूहें एक दूजी को, नजीक बैठो आए ।
जिन कोई जुदी परे, रहिए अंग लपटाए ॥२५॥

हाथों-हाथ न छोड़िए, लग रहिए अंगो अंग ।
इन विध एक दिल राखिए, कोई छोड़े ना काहू को संग ॥२६॥

हम हमेसा एक दिल, जुदियां होवें क्यों कर ।
हक खेल देखावहीं, कर आगे से खबर ॥२७॥

अंग जुदे ना हो सकें, तो क्यों होए जुदे दिल ।
एक जरा जुदे ना होए सकें, अंग यों रहें हिल मिल ॥२८॥

रूहें कहें एक दूजी को, जिन अंग जुदा करो कोए ।
इन विध रहो लपटाए के, सब एक वजूद ज्यों होए ॥२९॥

रूहें रब्द कर बैठियां, जानें सामी हाँसी करें हकसों ।
पर हकें हाँसी ऐसी करी, सुध जरा न रही किनमों ॥३०॥

एक वजूद होए बैठियां, खेलें ऐसी दई भुलाए ।
कौल फैल हाल सब जुदे, दिल ऐसे दिए फिराए ॥३१॥

जात भांत जिनसें जुदी, जुदी जुदी जिमी पैदाए ।
सब बैठियां अंग लगाए के, खेलें कहूं दिए उलटाए ॥३२॥

जुदे जुदे कबीलों, कर बैठियां अपना घर ।
जानें हम इत कदीम[1] के, जुदे होवें क्यों कर ॥३३॥

सो भी कबीले स्वारथी, दुख आए न कोई अपना ।
जात वजूद भी रंग बदले, ज्यों फना होत सुपना ॥३४॥

रूहें सुध ना एक दूजी की, ना मिनों मिनें पेहेचान ।
याद बिना जात मुद्दत, काहूं सुपने न आवें सुभान ॥३५॥

खेल तो है एक खिन का, रूहें जानें हुई मुद्दत ।
कई कुरसी[2] हुई कई होएसी, गईयां भूल मूल सोहोबत ॥३६॥

आइयां झूठे कबीले में, भूल गईयां बका वतन ।
सुख अर्स अजीम के, हाए हाए फरेब दिया दुनी इन ॥३७॥

तिन कबीले में रेहेना, पूजें पानी आग पत्थर ।
बेसहूर इन भांत के, जान बूझ जलें काफर ॥३८॥

बड़के फना[3] हो गए, और हाल होत फना ।
आखिर फना सब पीछले, जाए गिनते रात दिना ॥३९॥

कहें हमको इन वतन में, मौत आवेगी अब ।
नफा नुकसानी हो चुकी, फेर जनम लेवें कब ॥४०॥

१. हमेसा से । २. वंशावली (पडाव) । ३. नष्ट ।

ऐसा मौत अपना जान के, लेत हैं नुकसान ।
जाग के नफा न लेवहीं, सुन ऐसा हक फुरमान ॥४१॥

उमर खोवें नुकसान में, पर करें नाहीं सहूर ।
याद न करें तिनको, जिनका एता बड़ा जहूर ॥४२॥

कहें हिन्दू पीछे मौत के, हम जनम लेसी फेर ।
जो अब हम भूलेंगे, तो नफा लेसी और बेर ॥४३॥

खेल ऐसा फरेब का, सब हवा को पूजत ।
सुध दोऊ को ना परी, कायम बका सुख कित ॥४४॥

ए तेहेकीक किने ना किया, कहावें सब बुजरक ।
जेती बात ल्यावें इलम की, तिन सबों में सक ॥४५॥

ए दुनियां इन विध की, ताए एती सुध सबन ।
हम सब बीच फना मिने, ठौर बका न पाया किन ॥४६॥

एता न जाने दुनियां, कहां से आए कौन हम ।
आए कौन फरेब में, ए हुआ किन के हुकम ॥४७॥

सब कोई कहे हुकमें हुआ, जिन हुकम किया सो कित ।
सो किनहूं ना पाइया, ताए खलक गई खोजत ॥४८॥

अवतार तीर्थंकर बड़े हुए, बड़े कहावें पैगंमर ।
पट बका किन खोल्या नहीं, सबों कह्या खुले आखिर ॥४९॥

सब पूजें खाहिस[1] अपनी, याही फना की वस्त ।
मिट्टी आग पानी पत्थर, करें याही की सिफत ॥५०॥

झूठे झूठा राचहीं, दिल सांच न पावत ।
ए सांच क्यों कर पावहीं, पेहेले दिल में न आवत ॥५१॥

नासूत और मलकूत लग, इनकी याही बीच नजर ।
देख किताबें यों कहें, हम पाई नहीं खबर ॥५२॥

१. ईच्छा अनुसार ।

इन बिध बोलें किताबें, देखो दिल के दीदों माहें ।
कानों सुन्या सो कछुए नहीं, ए देख्या सो भी नाहें ॥५३॥

जान बूझ पूजें फना को, कहें एही हमारा खुदाए ।
हम छोड़ें ना कदीम का, जो बड़कों पूज्या इप्तदाए ॥५४॥

इस्क लगावें तिन सों, जो दुख रूपी दिन रात ।
कायम सुख अर्स का, कहूँ सुपने न पाइए बात ॥५५॥

ऐसी देखाई दुनियां, जानें सांच है हमेसगी ।
सांचो विचार जब कर दिया, तब झूठों भी झूठ लगी ॥५६॥

हुई रात अंधेरी फरेब की, फिरत चिरागें[1] दोए ।
आप अर्स हक की, इन से खबर न होए ॥५७॥

दुनियां इन चिराग को, रोसन कर बूझत ।
आप वतन हक बका की, इनसे कछू ना सूझत ॥५८॥

ढूंढ़ थके अर्स को, चौदे तबक न पाया किन ।
रात फना को छोड़ के, किन देख्या न सूर रोसन ॥५९॥

चौदे तबक जुलमत[2] से, पेहेले कही जो रात ।
दिन कायम सूर अर्स की, इत काहूं न पाइए बात ॥६०॥

सूर ऊग्या तब जानिए, ए रोसन हुआ अर्स हक ।
दुनियां सब के अंग में, काहूं जरा न रही सक ॥६१॥

अर्स बका जाहेर हुआ, तब हुई फजर ।
अर्स देखाया इलमें, खुली बातून सबों नजर ॥६२॥

हकीकत कुरान में, ए लिखी नीके कर ।
सबको करसी कायम, जाहेर हुए कायम खबर ॥६३॥

जो होसी रूहें अर्स की, तिन आवे ईमान अव्वल ।
आखिर तो सब ल्यावसी, दोजख की आग जल ॥६४॥

१. दीपक (सूरज - चांद) । २. माया रूपी अंधकार ।

सो ताला इन मुसाफ का, क्यों खुले ईमान बिन ।
खोले ताला फरेब क्यों रहे, जब उग्या बका अर्स दिन ॥६५॥

जोलों ताला खुले नहीं, द्वार अथरवन कतेब ।
पाई ना तरफ हक बका, ना कछू खेल फरेब ॥६६॥

ए हकीकत जिनकी, अपनी खोले सोए ।
सो खोले हक जाहेर हुआ, तब क्यों कर रेहेवे दोए[1] ॥६७॥

फरेब कछुए ना रह्या, रोसन उमत करी जब ।
हक अर्स जाहेर हुआ, तब कायम दुनी हुई सब ॥६८॥

लिख्या दिन बका मुसाफ में, खोले बातून होसी फजर ।
लिए हकीकत हैयाती[2], बका सुख पावें आखिर ॥६९॥

कुन्जी भेजी हाथ रूहअल्ला, पर खोल न सके ए ।
फुरमान खुले आखिर, हाथ सूरत हकी जे ॥७०॥

सहूर दिया साहेब ने, फुरमान भेज्या हाथ रसूल ।
पावे न हकीकत मुसाफ[3] की, ए खोलिए किन सूल ॥७१॥

रसूल कहे फुरमान में, मेरी तीनों एक सूरत ।
सो पोहोंची नजीक हक के, और कोई न पोहोंच्या तित ॥७२॥

बसरी मलकी और हकी, माहें फैल तीनों के ।
सो खोले फुरमान को, आखिर सूरत हकी जे ॥७३॥

और चाहे कोई खोलने, क्योंकर खोले सोए ।
सो कौल खोले हक हुकमें, फैल हाल जिनों के होए ॥७४॥

हुआ दीदार सब मेयराज में, जो हरफ कहे हकें मुझ ।
जो छिपे रखे मैं हुकमें, सो कौन जाहेर करे मेरा गुझ ॥७५॥

जो हुकम हुआ जाहेर का, सो जाहेर किए मैं तब ।
बाकी रखे जो हुकमें, सो हुकमें जाहेर करों अब ॥७६॥

१. द्वैतभाव - माया । २. कायमी । ३. कुरान ।

ए बातें सब मेयराज की, रखें जाहेर तीन सूरत ।
और कोई न केहे सके, ए अर्स हक न्यामत ॥७७॥

और तीनों सूरत, रूहें फरिस्ते उमत ।
जो आखिर इनों में गुजरी, मुसाफ में सोई हकीकत ॥७८॥

सो खोले आपे अपनी, हकीकत फुरमान ।
खोले परदे नूर पार के, हुई अर्स पेहेचान ॥७९॥

सक जरा किन ना रही, जब खोले ताले[1] ए ।
हुआ सूर बका अर्स जाहेर, लिख्या मुसाफ में जे ॥८०॥

ए इलम आए पीछे, नींद आवत क्यों कर ।
जब सक जरा ना रही, रूहों क्यों न आवे याद घर ॥८१॥

याद करो बीच अर्स के, जो हक सों किया मजकूर ।
मांग्या खेल फरामोस का, बैठ के हक हजूर ॥८२॥

तुम बका सुख छोड़ के, खेल मांग्या हाँसी को ।
सो देखो हकीकत अपनी, हकें भेजी फुरमान मों ॥८३॥

खेल देखाया तुमको, वास्ते तफावत[2] ।
इत याद देत सुख पावने, हक बका निसबत ॥८४॥

इन झूठी जिमी में बैठाए के, देखाई हक बका निसबत ।
मेहेर करी रूहों पर, देने अर्स लज्जत ॥८५॥

इन ख्वाब जिमी में बैठे के, अर्स सुख लीजे इत ।
हक याद देत तिन वास्ते, सब बका न्यामत ॥८६॥

कैसा इलम था तुम पे, पूजते थे किन को ।
कैसे झूठे कबीले में थे, अब आए किनमों ॥८७॥

कौन किया था वतन, जामें कबूं मिटी ना सक ।
कौन फना सोहोबत में, कहावते थे बुजरक ॥८८॥

१. गूढ़ भेद । २. अन्तर ।

अब कैसा पाया हक इलम, कैसे हुए बेसक ।
कैसा पाया बका वतन, कैसा पाया धनी हक ॥८९॥

कैसा पाया रूहों कबीला, कैसी पाई हक निसबत ।
कैसे दुख से निकस के, पाई सांची न्यामत ॥९०॥

कैसे फना में हुते, आए कैसे बका वतन ।
आए कैसे सुख में, छूटी कैसी जलन ॥९१॥

कैसे झूठे घर हुते, पाई कैसी अर्स मोहोलात ।
जागत हो के नींद में, कछू विचारत हो ए बात ॥९२॥

कौन जंगल गुमराह में हुते, कैसा पाया अर्स बाग ।
नींद उड़ाओ विचार के, क्यों ना देखो उठ जाग ॥९३॥

चरकीन[1] जिमी में बैठ के, कैसी लेते थे वाए ।
अब वाए[2] झरोखे अर्स के, कैसी लेत हो अब आए ॥९४॥

कौन बदबोए[3] में हुते, अब आई कौन खुसबोए ।
सहूर अपने दिल में, तौल देखो ए दोए ॥९५॥

ए कैसा था दुख वजूद, दुख में थे रात दिन ।
अब पाया सुख अर्स ठौर में, और कैसे अर्स तुम तन ॥९६॥

कैसे सुख पाए कायम तन के, किनसों हुआ मिलाप ।
अब देखो साहेब अर्स का, पूछो रूह अपनी आप ॥९७॥

कहां रात दिन गुजरानते, अब पाया अर्स रात दिन ।
देखो दिल विचार के, कछू फरक है उन इन ॥९८॥

कैसी झूठी निसबत में, करते थे गुजरान ।
अब निसबत भई अर्स की, लेत संग सुभान ॥९९॥

पेहेनावा फना मिने, और पेहेनावा अर्स का ।
कछू पाई है तफावत, तुम देखो दिल अपना ॥१००॥

१. गन्दा, मैला । २. वायु । ३. दुर्गन्ध ।

अब जिमी फना के, और जिमी बका पटंतर[1] ।
पसु पंखी देखो फना के, देखो अर्स जानवर ॥१०१॥

देखो ताल नदी झूठी जिमी, और देखो अर्स हौज जोए ।
करो याद सुख द्यो रूह को, दिल देख तफावत दोए ॥१०२॥

दिल मजाजी[2] और हकीकी[3], कहे कुरान में दोए ।
ए लेसी तफावत देख के, जो रूह अर्स की होए ॥१०३॥

दिल मजाजी दुनी का, इत अबलीस पातसाह ।
सो औरों दुस्मन और आपका, मारत सबकी राह ॥१०४॥

और दिल हकीकी मोमिन, सो कह्या है अर्स हक ।
तरफ नहीं दिल पाक की, जित साहेब की बैठक ॥१०५॥

इस्क मोमिन और दुनी का, कछू देखत हो फरक ।
अब इस्क ल्यो दिल अपने, तुम दिल अर्स बुजरक ॥१०६॥

महामत कहे ऐ मोमिनों, जो दिए थे दिल भुलाए ।
फरामोस से बीच होस के, अब साहेब लेत बुलाए ॥१०७॥

॥प्रकरण॥१४॥चौपाई॥८७६॥

आसिक मेरा नाम, रूह-अल्ला आसिक मेरा नाम ।
इस्क मेरा रूहन सों, मेरा उमत में आराम ॥१॥

इलम ले चलो अर्स का, खोल द्यो हकीकत ।
भूल गईयां आप अर्स को, याद देओ निसबत ॥२॥

इसारतें रमूजें इत की, लिखी माहें फुरमान ।
सो भेज्या हाथ रसूल के, मिलाए देओ निसान ॥३॥

और भेजत हों तुमको, कहियो मूल संदेसे ।
इलम ऐसा दिया तुमको, जासों उठें मुरदे ॥४॥

१. अन्तर । २. असत्य । ३. सत्य ।

रेहे ना सकों मैं रूहों बिना, रूहें रेहे ना सकें मुझ बिन ।
जब पेहेचान होवे वाको, तब सहें ना बिछोहा खिन ।।५।।

जब इलम मेरा पोहोंचिया, तब ए होसी बेसक ।
तब साइत ना रेहे सकें, ऐसा इनों का इस्क ।।६।।

ए बात मैं पेहेले कही, रूहें होसी फरामोस ।
मेरे इलम बिना तुम कबहूं, आए न सको माहें होस ।।७।।

फरामोसी हम को क्या करे, फेर कह्या रूहन ।
हम अरवाहें अर्स-अजीम की, असल बका में तन ।।८।।

फुरमान तुमारा आवसी, सो हम पढ़ कर ।
देख इसारतें रमूजें, हम भूल जाएं क्यों कर ।।९।।

और देवें साहेदी रसूल, दे याद बातें असल ।
तब क्यों रेहेवे फरामोसी, कहां जाए मूल अकल ।।१०।।

सुन सुख बातें अर्स की, क्यों ना होवें हुसियार ।
जो मोमिन होवे अर्स की, माहें रूहें बारे हजार ।।११।।

सो तो तबहीं सुन के, होसी खबरदार ।
मोमिन इत क्यों भूलहीं, सुन संदेसे परवरदिगार ।।१२।।

आगूं से चेतन करी, एती करी मजकूर ।
रूहें सुन ए सुकन, क्यों याद न आवे जहूर ।।१३।।

ए फुरमान पढ़े पीछे, पाई जब हकीकत ।
तब फरामोसी क्यों कर रहे, क्यों भूलें ए निसबत ।।१४।।

हाए हाए ऐसी हमसे क्यों होए, कैसे हम मोमिन ।
सुन संदेसे क्यों भूलहीं, हक आप वतन ।।१५।।

एता हम जानत हैं, जो सौ फरेब[1] करो तुम ।
ऐसा इस्क क्यों होवहीं, तुमको भूलें हम ।।१६।।

१. भ्रमित करना ।

तुम कूदत हो अर्स में, अपने इस्क के बल ।
तब सुध जरा ना रहे, रहे न एह अकल ॥१७॥

सो खेल मांगत हो, वास्ते इस्क देखन ।
ए खेल है इन भांत का, उत इस्क न जरा किन ॥१८॥

ना इस्क ना अकल, ना सुध आप वतन ।
ना सुध रेहेसी हक की, ए भूलोगे मूल तन ॥१९॥

कई चालें बोली जुदियां, माहें मजहब भेख अपार ।
पूजें आग पानी पत्थर, इनमें खुदा हजार ॥२०॥

खाहिस[1] से बनावहीं, अपने हाथ समार ।
जुदा जुदा कर पूजहीं, जिनको नाहीं पार ॥२१॥

खेल देखाऊं इन भांत का, जित झूठै में आराम ।
झूठे झूठा पूजहीं, हक का न जानें नाम ॥२२॥

एक पैदा हुए एक होत हैं, एक होने की उमेद ।
एक गए जात जाएंगे, इन विध को छल भेद ॥२३॥

देखोगे आसमान जिमी, माहें मुरदों का वास ।
देत देखाई मर जात हैं, कर गिनती अपने स्वांस ॥२४॥

मौत सबों के सिर पर, मान लिया सबन ।
चौदे तबक के खेल में, ठौर बका न पाया किन ॥२५॥

खेलत सब फना में, बोलें चालें सब फना[2] ।
सब जानत आपे आपको, हम उड़सी ज्यों सुपना ॥२६॥

तब रूहों मुझ आगे कह्या, ऐसा इस्क हमारा जोर ।
फरामोसी क्या करे हम को, इस्क देवे सब तोर ॥२७॥

ए मजकूर भई रूहन सों, मुझ सों किया रब्द ।
और कछुए न ल्यावें दिल में, आप इस्क के मद ॥२८॥

१. चाहना । २. नाश ।

बातें बोहोत करी रूहन सों, मेरा कह्या न ल्याइयां दिल ।
सुन्या न आगूं इस्क के, बहस किया सबों मिल ॥२९॥

मैं कह्या इस्क मेरा बड़ा, हादी रूहों आप माफक ।
एह बात जब मैं करी, तब तुम उपजी सक ॥३०॥

कहे हादी इस्क मेरा बड़ा, कहें रूहें बड़ा हम प्यार ।
ए बेवरा बीच अर्स के, ए होए नहीं निरवार[1] ॥३१॥

क्यों होए तफावत इस्क, बैठे बीच बका में हम ।
एक जरा न होए जुदागी, तो क्यों पाइए ज्यादा कम ॥३२॥

पेहेले कह्या मैं तुम को, भूलोगे खेल देख ।
जहां झूठे झूठा खेलहीं, उत मुझे न पाओ एक ॥३३॥

ए हकें अव्वल कह्या, भूल जाओगे तुम ।
ना मानोगे फुरमान को, ना कछू रसूल हुकम ॥३४॥

ना मानोगे संदेसे, ना मुझे करोगे याद ।
झूठा कबीला करोगे, लगसी झूठा स्वाद ॥३५॥

जान बूझ के पूजोगे, पानी पत्थर आग ।
सब केहेसी ए झूठ है, तो भी रहोगे तिन लाग ॥३६॥

पूजोगे सब फना को, कोई ऐसा खेल बेसुध ।
ना तो क्यों पूजो मिट्टी गोबर, पर क्या करो बिना बुध ॥३७॥

सुकन मेरा मानो नहीं, सबे भरी इस्क के जोस ।
सबे बोलें नाचें कूदहीं, हमें कहा करे फरामोस ॥३८॥

हार दिया तब मैं इनों को, रब्द न किया हम ।
जाए फंदियां झूठ में, नेक देखाया तिलसम[2] ॥३९॥

इस्क ज्यादा आपे अपना, सबों किया रब्द ।
फरामोसी तिलसम देखाइया, तिन किया सब रद ॥४०॥

१. फैसला । २. जादू का खेल (माया) ।

अब सो क्योंए आप को, काढ़ न सकें तिलसम[1] ।
फुरमान ले पोहोंच्या रसूल, तो भी न आवे सरम ॥४१॥

फुरमान लिख्या इन विध का, जो पढ़ के देखें ए ।
एक जरा सक न रहे, तबहीं जागें हिरदे ॥४२॥

ऐसा रसूल भेजिया, और भेज्या फुरमान ।
और संदेसे रूहअल्ला, तो भी हुई नहीं पेहेचान ॥४३॥

बड़ा इस्क सबों अपना, कह्या रूहों रब्द कर ।
तिलसम तो देखाइया, पावने पटंतर ॥४४॥

रूहअल्ला भेद तिलसम का, रूहों देवे बताए ।
तबहीं रूहों के दिल से, फरामोसी उड़ जाए ॥४५॥

रूहें सुनो तुम संदेसे, मैं ल्याया तुम पर ।
जो रब्द किया माहें बका, सो ल्याओ दिल भीतर ॥४६॥

मुझे भेज्या हक ने, याद दीजो मेरा सुख ।
तब इनों तिलसम का, उड़ जासी सब दुख ॥४७॥

बीच बका के बैठ के, हकें कह्या यों कर ।
रूहअल्ला कहियो रूहन से, भूल गइयां हक घर ॥४८॥

हाथ रसूल के भेजिया, तुम ऊपर फुरमान ।
हकीकत मारफत की, तुम क्यों न करो पेहेचान ॥४९॥

रब्द किया था अव्वल, सो क्यों गैयां तुम भूल ।
अजूं याद दिए न आवहीं, सुन एती पुकार रसूल ॥५०॥

और संदेसे रूहअल्ला, सुने जो अलेखे ।
तो भी आंखें खुली नहीं, आए बका से हक के ॥५१॥

ऐसा इलम हकें भेजिया, आंखें खोल दई बातन ।
एक जरा सक ना रही, देखे बका वतन ॥५२॥

१. वह माया जहां आदमी खो जाए फिर उसे घर पहुँचने का रास्ता न मिले ।

बेसक जान्या आपे अपना, बेसक जान्या हक ।
बेसक जान्या हादीय को, उमत हुई बेसक ॥५३॥

ए याद नीके दीजियो, तुम देखो सहूर कर ।
मेरे इलम से रूहों को, देवे साहेदी अंतर ॥५४॥

बेसक इलम पोहोंचिया, के नाहीं पोहोंच्या तुम ।
ए देखो दिल विचार के, तो न्यारा नहीं खसम ॥५५॥

इलम पोहोंच्या होए तुमको, हमारा बेसक ।
तो संदेसे तुमारे इत के, क्यों ना पोहोंचे बका में हक ॥५६॥

किन ठौर छिपाए तुम को, बोलत हो कहां से ।
कौन तरफ हो अर्स के, ए सहूर करो दिल में ॥५७॥

देखो दिल से दसो दिस, किन तरफ हैं हक ।
ए विचार देखो इलम को, तो जरा ना रहे सक ॥५८॥

कौन तरफ वजूद है, कौन तरफ है कौल ।
हाल कौन तरफ का, कौन तरफ है फैल ॥५९॥

ए सब एक तरफ हैं, के जुदे जुदे दौड़त ।
देखो सहूर करके, है कौन तरफ निसबत ॥६०॥

जब एक ठौर पांचों भए, तब तुमारा इत का ।
सत संदेसा हक को, क्यों न पोहोंचे माहें बका ॥६१॥

इलम दिया तुमें खुदाई, तब बदले कौल चाल ।
फैल होवे वाहेदत का, तब बेर[1] न लगे हाल ॥६२॥

गुजरी अर्स बका मिने, मजकूर जो मुतलक[2] ।
सो इलम हकें ऐसा दिया, जिनमें जरा न सक ॥६३॥

एही तुमारी भूल है, तुमें बंधन याही बात ।
एही फरामोसी तुम को, जो भूल गए हक जात ॥६४॥

१. देर । २. बेसक, निःसंदेह ।

कौल फैल जुदे हुए, हुआ फरामोसी हाल ।
अब पड़े याही सक में, इन जुदागी के ख्याल ॥६५॥

सो ए इलम जब हक का, देत अर्स की याद ।
तुमें बेसक गुजरे हाल की, क्यों न आवे कायम स्वाद ॥६६॥

फरामोसी कुलफ[१] की, कुंजी इलम बेसक ।
करो सहूर तुम रूह सों, जो बकसीस है हक ॥६७॥

ए ऐसा इलम है लदुन्नी, जो देत बका की बूझ ।
बेसकी सब देत है, और देत हक के दिल का गूझ[२] ॥६८॥

ऐसी कुंजी हकें दई, जो सहूरें कुलफ लगाए ।
तो फरामोसी[३] क्यों रहे, पर हाथ हुकम जगाए ॥६९॥

बैठे आगूं हक के, किया था मजकूर ।
इंतहाए[४] नहीं अर्स जिमी का, तुम कहूं नजीक हो के दूर ॥७०॥

बाहेर तो ना जाए सको, छेह[५] न आवे जिमी इन ।
एक जरा जुदा न होए सके, तुमें ठौर न बका बिन ॥७१॥

हक संदेसे लेत हो, कौन तरफ तुमसों हक ।
आया इलम खुदाई तुम पे, तिनमें जरा न सक ॥७२॥

तुमें अर्स देखाया दिल में, जो खोलो ले कुंजी सहूर ।
कुलफ फरामोसी ना रहे, अर्स दिल हक हजूर ॥७३॥

बिना विचारे रेहेत है, तुम पे हक इलम ।
ए सहूर रूहें पोहोंचहीं, तबहीं उड़े तिलसम ॥७४॥

तीन उमत कही खेल में, एक रूहें और फरिस्ते ।
तीसरी खलक आम जो, ए सब लरें सरीयत जे ॥७५॥

कुंन[६] से और नूर से, ए दोऊ पैदास ।
रूहें उतरी अर्स अजीम से, कही असल खासल खास ॥७६॥

१. ताला । २. गुप्त । ३. बेहोशी । ४. अन्त । ५. सीमा । ६. "हो जा" ।

ए इलम-इलाही[1] देत हों, तो भी छूटत नहीं तिलसम ।
हकें पेहेले कह्या भूलोगे, न मानोगे हुकम ॥७७॥

सोई बातें अब मिली, भूल गैयां घर तुम ।
भूली आप और हक को, भूलियां अकल इलम ॥७८॥

फुरमान रसूल ले आइया, रूहअल्ला संदेसे ।
असल इलम दे दे थके, अजूं न आवे अकल में ए ॥७९॥

कही बड़ी मेहेर रसूलें, जो हुई माहें रात मेयराज ।
फजर होसी जाहेर, सो रोज कयामत है आज ॥८०॥

तो मजकूर मेयराज का, ए जो किया जाहेर मेहेरबान ।
मोमिन देखो हक सहूर से, खोली मारफत-फजर[2] सुभान ॥८१॥

महामत कहे ऐ मोमिनों, अजूं फरामोसी[3] न जात ।
बेसक देखो दिन बका[4], माहें मेयराज की रात ॥८२॥

॥प्रकरण॥१५॥चौपाई॥९५८॥

मेहेर हुई महंमद पर, खोले नूरतजल्ला द्वार ।
सब मेयराज में लेय के, दिया हकें दीदार ॥१॥

बीच बका के पोहोंचिया, जित जले जबराईल पर ।
तित नब्बे हजार हरफ सुने, फिरे जो मजकूर कर ॥२॥

हुकम हुआ इमाम को, खोल दे द्वार रूहन ।
आवें सब मेयराज में, दिल देखें अर्स मोमिन ॥३॥

खिलवत सब मेयराज में, जो रूहों करी अव्वल ।
सो खोले हक हादीय की, ज्यों देखें हकीकी दिल ॥४॥

आखिर गिरो जो रूहन, सब मेयराज में आराम ।
याको दई इमामें हुकमें, वाहेदत की अर्स ताम[5] ॥५॥

१. तारतम ज्ञान । २. पूर्णज्ञान, सवेरा । ३. ब्रह्म निद्रा । ४. कायमी (अखण्ड) । ५. आहार ।

खिलवत हक हादी रूहन की, कबूं न जाहेर किन ।
सो रूहअल्ला ने रूहसों, तिन कही आगे मोमिन ।।६।।

एक समे हक हादी रूहें, मिल किया मजकूर ।
रब्द किया इस्क का, सबों आप अपना जहूर ।।७।।

रूहें कहें सब मिल के, हक के आसिक हम ।
इस्क पूरा है हम में, ए नीके जानो तुम ।।८।।

और आसिक बड़ी रूह के, इनमें नाहीं सक ।
इस्क हमारे रूहन के, जानत हैं सब हक ।।९।।

बड़ी रूह कहे मुझ में, हक का पूरा इस्क ।
रूहें प्यारी मेरी रूह की, इनमें नाहीं सक ।।१०।।

तब हकें कह्या सबन को, मैं तुमारा आसिक ।
और आसिक बड़ी रूह का, कौन मेरे माफक ।।११।।

खबर मेरे इस्क की, तुम जानी नहीं किन ।
इस्क बड़े सबों अपने, तो कहे रूहन ।।१२।।

और पातसाही मेरे अर्स की, तुमको नहीं खबर ।
इस्क सबों को अपने, तो बड़े आए नजर ।।१३।।

बुजरक इस्क अपना, तोलों देख्या तुम ।
कादर की कुदरत की, तुमको नाहीं गम ।।१४।।

साहेबी अर्स अजीम की, तुमें नजर आवे तब ।
नूर-तजल्ला नूर थें, जुदे होए देखो जब ।।१५।।

खबर तुमारे इस्क की, तो होवे जाहेर ।
सब मिल जाओ इत थें, बका से बाहेर ।।१६।।

एक पातसाही अर्स की, और वाहेदत का इस्क ।
सो देखलावने रूहन को, पेहेले दिल में लिया हक ।।१७।।

कहूं विध वाहेदत की, बात करनी हकें जे ।
सो अपने दिल पेहेले लेय के, पीछे आवे दिल वाहेदत के ॥१८॥

पोहोर दिन से चार घड़ी लग, बरस्या हक का नूर ।
इस्क तरंग सबों अपने, रोसन किए जहूर ॥१९॥

अपने अपने इस्क का, सबों देखाया भार ।
तोलों किया रब्द, दिन पीछला घड़ी चार ॥२०॥

एह बातें असल की, करते इस्क सों प्यार ।
हँसते खेलते बोलते, एही चलत बारंबार ॥२१॥

अपना अपना इस्क, बड़ा जानत सब कोए ।
बीच बका के बेवरा, इस्क का न होए ॥२२॥

इस्क का हक हादी रूहें, रब्द किया माहों-माहें ।
सो हक से बीच अर्स के, घट बढ़ होवे नाहें ॥२३॥

जित जुदागी जरा नहीं, तित बेवरा क्यों होए ।
ताथें रूहें रब्द हक का, क्यों ए ना निबरे[1] सोए ॥२४॥

एक पात न गिरे अर्स बन का, ना खिरे पंखी का पर ।
अपार जिमी की रूह कोई, कहूं जाए न सके क्योंए कर ॥२५॥

आगूं वाहेदत जिमी के, कहूं नाम न जरा एक ।
आगूं जरे वाहेदत के, उड़ें ब्रह्मांड अनेक ॥२६॥

रूहें उन वाहेदत की, ताए फरेब न रहे नजर ।
सो क्यों पड़े फरेब में, देखो सहूर कर ॥२७॥

मौत उत पैठे नहीं, कायम[2] अर्स सुभान ।
ठौर नहीं अबलीस को, जरा न कबूं नुकसान ॥२८॥

अर्स बका वाहेदत में, सुध इस्क न होवे इत ।
जुदे जुदे हो रहिए, इस्क सुध पाइए तित ॥२९॥

१. निपटे । २. अखंड ।

वाहेदत में सुध इस्क की, पाइए नहीं क्योंए कर ।
घट बढ़ इत है नहीं, अर्स में एकै नजर ॥३०॥

बिना जुदागी इस्क की, क्यों कर पाइए खबर ।
सो तो बका में है नहीं, सब कोई बराबर ॥३१॥

कोई बात खुदा से न होवहीं, ऐसे न कहियो कोए ।
पर एक बात ऐसी बका मिने, जो हक से भी न होए ॥३२॥

कौल फैल हाल बदले, पर ना छूटे रूह इस्क ।
रूह इस्क दोऊ बका, इनमें नाहीं सक ॥३३॥

दिल फिरे रंग फिरत है, जुसा[१] जोस[२] बदलत ।
पर असल इस्क ना बदले, जो नेहेचल[३] रूह न्यामत[४] ॥३४॥

रूहों सबों इस्क का, किया बड़ा मजकूर ।
इस वास्ते बेवरा इस्क का, मुझे देखलावना जरूर ॥३५॥

इस्क बेवरा देखने, एक तुमें देखाऊं ख्याल ।
इस्क तअल्लुक[५] रूह के, छूटे ना बदले हाल ॥३६॥

रूहें अर्स अजीम की, ताए लगे ना कोई नुकसान ।
ऐसा खेल देखाऊं तुमें, जो कछू ना रहे पेहेचान ॥३७॥

ऐसा इस्क तुम पे, रूह से क्यों ए ना छूटत ।
पर ए खेल इन भांत का, जगाए भी न जागत ॥३८॥

मैं छिपोंगा तुमसे, तुम पाए न सको मुझ ।
न पाओ तरफ मेरीय को, ऐसा खेल देखाऊं गुझ ॥३९॥

और कहूं जाए छिपोगे, के हमको करोगे दूर ।
के इतहीं बैठे देखाओगे, धनी अपने हजूर ॥४०॥

दूर कहूं न जाऊंगा, तुम बैठो पकड़ चरन ।
खेल देखोगे इतहीं, तुम मिल सब मोमिन ॥४१॥

१. शरीर । २. आवेश । ३. निश्चित - अखण्ड । ४. संपदा । ५. सम्बन्ध ।

हम सब मिल मोमिन बैठेंगे, पकड़ तुमारे चरन ।
तब कहा करसी फरामोसी, जब बैठें होए एक तन ॥४२॥

गले बाथ सब लेय के, मिल बैठेंगे एक होए ।
तो फरामोसी कहा करे, होए न जरा जुदागी कोए ॥४३॥

जेते कोई मोमिन, सो बैठे तले कदम ।
तो तुमारे रसूल का, फेरें नाहीं हुकम ॥४४॥

जो मुनकर[1] हुकम सों, मोमिन कहिए क्यों ताए ।
द्यो फरामोसी हम को, देखो सौ बेर अजमाए ॥४५॥

सो कैसा मोमिन, अर्स की अरवाहें ।
हम कदमों बीच अर्स के, क्यों जासी भुलाए ॥४६॥

जेती रूहें अर्स की, ताए फरामोसी न जाए जीत ।
कछू पड़े बीच अपने, ए नहीं इस्क की रीत ॥४७॥

कछुए न चले फरामोस का, हम आगूं हुए चेतन ।
इस्क हमारे रूह के, असल है एक तन ॥४८॥

बका आड़े पट करों, तुम देख न सको कोए ।
झूठे मिलावे कबीले, तुम देखोगे सब सोए ॥४९॥

बैठियां सब मिल के, अंग सों अंग लगाए ।
उठाऊं जुदे जुदे मुलकों, नए नए वजूद बनाए ॥५०॥

पर ऐसा देखोगे तिलसम, जो सबे हुई फरामोस ।
इलम देऊं मेरा बेसक, तो भी ना आओ माहें होस ॥५१॥

एह खेल ऐसा है, तुम अपना कबीला कर ।
कोई न किसी को पेहेचाने, बैठो जुदे जुदे कर घर ॥५२॥

तेहेकीक जानोगे झूठ है, तो भी दिल से न छूटे एह ।
ऐसी मोहोब्बत बांधोगे, झूठे सों सनेह ॥५३॥

१. न मानना ।

वाही जानोगे न्यामत, और वाही से करोगे प्यार ।
सुख दुख सारा झूठ का, वाही कुटम परिवार ॥५४॥

आग पानी पूजोगे, या सूरत बनाए पत्थर ।
कहोगे हमारा हक है, सब की एह नजर ॥५५॥

आसमान जिमी पाताल लग, सब झूठे झूठ मन्डल ।
ऐसे झूठे खेल में, तुम जाओगे सब रल ॥५६॥

हक इनों में न पाइए, ना कछू सुनिया कान ।
सांच न पाइए इनों में, ए झूठे फना निदान ॥५७॥

झूठा खेल कबीले झूठे, झूठे झूठा खेलें ।
सब झूठे पूजें खाएं पिएं झूठे, झूठे झूठा बोलें ॥५८॥

झूठा सब लगेगा मीठा, झूठा कुटम परिवार ।
सुख दुख इनमें झूठी चरचा, हुआ सब झूठै का विस्तार ॥५९॥

इस्क तुमारा तो सांचा, मोहे याद करो बखत इन ।
रब्द किया तुम मुझसों, बीच बका वतन ॥६०॥

ऐसी तो कोई ना हुई, बिना इलम होवे हुसियार ।
हाँसी बिना कोई ना रही, छोड़ ना सके अंधार ॥६१॥

इलम मेरा लेय के, निसंक[1] दुनी से तोड़ ।
सोई भला इस्क, जो मुझ पे आवे दौड़ ॥६२॥

झूठा खेल देखाइया, चौदे तबक की जहान ।
एक कंकरी होवे अर्स की, तो उड़े जिमी आसमान ॥६३॥

ज्यों नींद में सुपन देखिए, कई लाखों वजूद देखाए ।
आंखां खोले उड़े फरामोसी, वह तबहीं मिट जाए ॥६४॥

फुरमान लिखूं तुमको, और भेजोंगा पैगाम ।
तुम कहोगे किन भेजिया, किनके एह कलाम ॥६५॥

१. बेसक, निडर ।

कहां है हमारा खसम, और वतन हमारा कित ।
चौदे तबकों में नहीं, ए किनकी किताबत ॥६६॥

आपन आए वास्ते मजकूर, अर्स से उतर ।
तो ए दुनियां जो तिलसम की, सो माने क्यों कर ॥६७॥

एह न पावें अर्स को, ना कछू पावें हक ।
ना कछू समझें इलम को, ए आप नहीं मुतलक[1] ॥६८॥

ए जो ढूंढ़त दुनियां, सो सब तिलसम के ।
ए क्यों पावें हक बका, तन असल नाहीं जे ॥६९॥

पैदा आदम हवा से, हिरस[2] हवा सैतान ।
इन बिध की ए पैदास, केहेवत कुरान पुरान ॥७०॥

रल गए वाही खेल में, कछू रही न असल बुध ।
रूहअल्ला कहे सौ बेर, तो भी आवे न दिल सुध ॥७१॥

देखा देखी करो इनकी, बैठे तिलसम माहें ।
तुम आए बका वतन से, ए मुतलक कछुए नाहें ॥७२॥

ए तिलसम खेल फना से, खेलत फना माहें ।
आखिर सब फना होवहीं, इत कायम जरा नाहें ॥७३॥

पट आड़ा बका वतन के, एही हुई फरामोस ।
जो याद करो हक वतन, इस्क न आवे बिना होस ॥७४॥

बेसक झूठ देखाइया, सो क्यों देखें हमको ।
रूहें लेवें इलम बेसक, तब पोहोंचें बका मों ॥७५॥

तुम देख्या तिन मुलक को, जित जरा ना इस्क ।
इत बेसक क्यों होवहीं, जित खबर न पाइए हक ॥७६॥

रूहें उन मुलक से, फिर ना सकें वतन ।
फरेब क्योंए ना छूटहीं, हक के इस्क बिन ॥७७॥

१. बिलकुल । २. लालच, हवस ।

ऐसी रूहें वाहेदत की, ताए फरेब पोहोंचे क्यों कर ।
ए बड़ा रूहों का तअजुब[1], जो बांधी झूठ सों नजर ॥७८॥

मैं भेजी रूह अपनी, सब दिल की बातें ले ।
तुमें तो भी याद न आवहीं, कोई आए बनी ऐसी ए ॥७९॥

सब बातें मेरे दिल की, और सब रूहों के दिल ।
सो भेजी मैं तुम पे, जो करियां आपन मिल ॥८०॥

ए बातें सब असल की, जब याद दई तुम ।
तब इस्क वाली रूहों को, क्यों न उड़े तिलसम ॥८१॥

जब लग लगे दुनियां, तब पोहोंचे न बका मों ।
एक रूह दूजा इस्क, आए काम पड़्या इनसों ॥८२॥

दूजा कछू पोहोंचे नहीं, हक को बीच बका ।
जहां रूह न होवे एकली, छोड़ सबे इतका ॥८३॥

बका बीच रूहन को, खेल देखावें हक ।
आया गया इत कोई नहीं, ए इलम कहे बेसक ॥८४॥

बेसक इलम सीख के, ऐसे खेल को पीठ दे ।
देखो कौन आवे दौड़ती, आगूं इस्क मेरा ले ॥८५॥

जब तुम भूले मुझ को, तब इस्क गया भुलाए ।
अब नए सिर इस्क, देखो कौन लेय के धाए ॥८६॥

याद करो इन इस्क को, जो रब्द किया सबों मिल ।
सो इस्क अपना कहां गया, टिक्या नहीं पाव पल ॥८७॥

सब ज्यादा केहेती अपना, करती अर्स में सोर ।
असल रूहों के इस्क का, कहां गया एता जोर ॥८८॥

किया रूहों सबों रब्द, पर आप न पकड़्या किन ।
फरामोसी सबों फिरवली[2], हुई हाँसी सबन ॥८९॥

१. हैरानी । २. घेर लिया ।

जब इस्क गया सब थें, तब निकल आई पेहेचान ।
जिनका इस्क जोरावर, ताए कछुक रहे निदान ॥९०॥

सब केहेती इस्क अपना, हमारा बेसुमार ।
सो रह्या न जरा किन पे, हाए हाए दिया सबों ने हार ॥९१॥

इनों बोहोत लाड़ किए मुझसों, मैं एक किया इनों सों ।
सो एक मेरे लाड़ में, सब बेहे गैयां तिनमों ॥९२॥

और इस्क भी जोरावर, तिनकी एह चिन्हार ।
जिन घट सुनत आवहीं, सोई जानो सिरदार ॥९३॥

और भी बेवरा इस्क का, जिनका होए बुजरक ।
ताए याद दिए क्यों न आवहीं, ऐसा क्यों जाए मुतलक ॥९४॥

रूहें बात सुनते हक की, तुरत ही करें सहूर ।
जब सहूर रूहें पकड़े, तो इस्क क्यों न करे जहूर ॥९५॥

और भी पेहेचान इस्क की, जो बढ़ के घट जाए ।
इस्क रूहों का हक सों, क्यों कहिए बका ताए ॥९६॥

इस्क हक का सो कहिए, जो इस्क है कायम ।
एक जरा कम न होवहीं, बढ़ता बढ़े दायम ॥९७॥

मेरा छूट्या न इस्क रूहों सों, नजर न छूटी निसबत ।
रूहों छूटी इस्क निसबत, ऐसी भूल गैयां खिलवत ॥९८॥

किया मजकूर इस्क का, अजूं सोई है साइत ।
पड़े बीच फरामोस के, तुम जानो हुई मुद्दत ॥९९॥

सक छूटी अर्स हक की, सब बातों हुई बेसक ।
तब अर्स अरवाहों को, क्यों न आवे इस्क ॥१००॥

तोलों चले ना इस्क का, जोलों आड़ी पड़ी सक ।
सो सक जब उड़ गई, तब क्यों न आवे इस्क हक ॥१०१॥

अव्वल इस्क जिनों आइया, सोई अर्स अरवाहें ।
नाहीं मुतलक मोमिन, जिनों लगे न बेसक घाए ॥१०२॥

बेसक इलम आइया, पाई बेसक हक दिल बात ।
हुए बेसक इस्क न आइया, सो क्यों कहिए हक जात ॥१०३॥

बेसक इलम रूहअल्ला का, जो हैयात करे फना को ।
मुरदे चौदे तबक के, उठें इन इलम सों ॥१०४॥

सो बेसक इलम ल्याइया, रूहअल्ला रूहन पर ।
जो अरवाहें अर्स की, ताए इस्क न आवे क्यों कर ॥१०५॥

इलम हक का सुनत ही, इस्क न आया जिन ।
तिनको नसीहत जिन करो, वह मुतलक नहीं मोमिन ॥१०६॥

है तीन वज्हे की उमत, इस्क बंदगी कुफर ।
सो तीनों आपे अपनी, खड़ियां मजल पर ॥१०७॥

सो तीनों लेवें नसीहत, पर छूटे नहीं मजल ।
जैसा होवे दरखत, तिन तैसा होवे फल ॥१०८॥

कोई बुरा न चाहे आप को, पर तिन से दूसरी न होए ।
बीज बराबर बिरिख है, फल भी अपना सोए ॥१०९॥

खेल झूठा देख्या नजरों, सो ले खड़े सिर आप ।
ताही में मगन भए, छोड़ कायम मिलाप ॥११०॥

अब सो क्योंए याद न आवहीं, जो रूहअल्ला आया तबीब[१] ।
दारू[२] न लगे तिनका, जाए हकें कह्या हबीब[३] ॥१११॥

चौदे तबक करसी कायम[४], दारू मसी[५] का ए ।
गई न फरामोसी रूहों की, आई हुकम सों जे ॥११२॥

आखिर रूहों नसीहत, ए तो हकें देखाया ख्याल ।
रूहों हक को देखाइया, कौल फैल या हाल ॥११३॥

१. हकीम (वैद्य) । २. दवाई । ३. प्रितम । ४. अखंड । ५. मसीहा - सद्‌गुरु श्री देवचंद्रजी ।

हकें खेल देखाए के, इलम दिया बेसक ।
हक हाँसी करे रूहन पर, देसी सबों इस्क ॥११४॥

कोई आगे पीछे अव्वल, इस्क लेसी सब कोए ।
पेहेले इस्क जिन लिया, सोई सोहागिन होए ॥११५॥

महामत कहे ऐ मोमिनों, जिन हाँसी कराओ तुम ।
याद करो बीच बका के, किया रब्द आगूं खसम ॥११६॥

।।प्रकरण।।१६।।चौपाई।।१०७४।।

प्रकरण तथा चौपाइयों का संपूर्ण संकलन
प्रकरण ३८१, चौपाई १०५५६

।।खिलवत सम्पूर्ण।।